

वर्ष : 2016



अंक : पैंतीसवां

# नव किरण

(अर्द्धवार्षिक)



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)  
हरियाणा, चण्डीगढ़ ।



## नवकिरण परिवार

|                 |                                                                                                        |
|-----------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| पत्रिका का नाम  | : नवकिरण                                                                                               |
| प्रकाशन की अवधि | : अर्द्धवार्षिक                                                                                        |
| वर्ष            | : 2016                                                                                                 |
| अंक             | : पैंतीसवां                                                                                            |
| संरक्षक         | : श्री कर्ण सिंह                                                                                       |
| प्रकाशक         | : डॉ सुरेन्द्र कुमार                                                                                   |
| प्रबन्धन        | : श्री राजिन्द्र कुमार भसीन                                                                            |
| सम्पादक         | : श्री कुमार शर्मा 'अनिल'                                                                              |
| सह—सम्पादक      | : श्री राजेश 'पंकज'<br>श्री संजीव कुमार                                                                |
| प्रकाशन स्थल    | : कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)<br>हरियाणा, लेखा भवन, प्लाट नं 4—5<br>सैक्टर 33—बी, चण्डीगढ़ । |
| मुखपृष्ठ        | : हरविंदर सिंह                                                                                         |
| मुद्रक          | : संजोग पब्लिशर्स, बूथ नं. 236, सैक्टर 34—सी,<br>चण्डीगढ़, मोबाईल 9814404970, 9814851298               |
| मूल्य           | : पाठकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा                                                                    |





## संदेश

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि आप के कार्यालय द्वारा विभागीय हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का 35 वां अंक शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करती हूँ।

वास्तव में, विभागीय पत्रिकाओं ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सदैव ही महत्वपूर्ण तथा निर्णायक भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कर्मचारियों की रचनात्मकता एवम् सृजनशीलता अभिव्यक्त होने के साथ-2 कार्यालय की समस्त गतिविधियों तथा कार्यकलापों की सम्पूर्ण जानकारी भी पाठकों तक पहुँचती है। 'नवकिरण' अपने इस उद्देश्य में सदैव सफल रही है तथा कार्यालय की साहित्यिक प्रतिभाओं को सामने लाते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास हेतु निरन्तर प्रयासरत है। आशा करती हूँ भविष्य में भी यह पत्रिका अपनी इस गौरवपूर्ण परम्परा का निर्वहन करती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल और सभी रचनाकारों एवम् पाठकों को बधाई देते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य एवं प्रगति की कामना करती हूँ।

पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

नमिता सेखी

(नमिता सेखों)

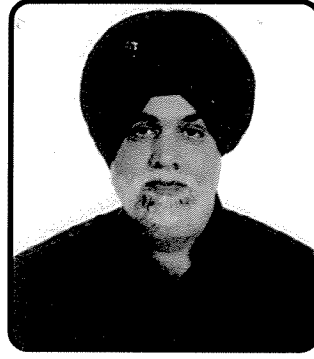
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

पंजाब एवं यू.टी., चण्डीगढ़









## संदेश

मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के आगामी अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार को गतिशील करने का प्रयास किया गया है। यह पत्रिका हिन्दी के विकास तथा हिन्दी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। इस अवसर मैं “नवकिरण” परिवार के सभी रचनाकारों एवं संपादन सहयोगियों को बधाई देता हूँ, जिनके सद्प्रयासों से इस पत्रिका का यह नवीन अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाएँ न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, वरन् कार्यालयों में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा जगाने में भी इन पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि “नवकिरण” के निरंतर प्रकाशन से न केवल कार्यालय के कर्मियों को हिन्दी में अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर प्राप्त होगा अपितु उन्हें हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा के फलस्वरूप संस्थान में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

पत्रिका के सफल एवं निरंतर प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जगबन्स सिंह

(जगबन्स सिंह)  
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)  
पंजाब, चण्डीगढ़।







## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “नवकिरण” के 35 वें अंक का प्रकाशन शीघ्र ही किया जा रहा है। यह पत्रिका, कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों और कार्य-कलापों की जानकारी ही उपलब्ध नहीं करवाती अपितु कार्यालय के अधिकारियों को अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए भी प्रेरित करती है। इससे हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हिंदी का प्रयोग भी बढ़ेगा।

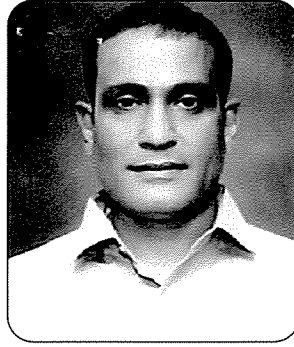
यह पत्रिका रचनाकारों को अपनी प्रतिभा मुखरित करने का मंच भी प्रदान करती है। मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है और हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता एवं सुबोधता के बल पर ही भारतीय संस्कृति और साहित्य को जीवंत बनाए रखा है। “नवकिरण” इस दिशा में निरंतर अग्रसर है। मुझे पूरा विश्वास है कि “नवकिरण” अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूरी तरह सफल रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति, उज्ज्वल भविष्य एवं सफल प्रकाशन के लिए शुभ कामनाएँ।

(महुआ पाल)  
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)  
हरियाणा, चण्डीगढ़







## संदेश

मुझे यह जानकर अति हर्ष का अनुभव हो रहा है कि आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 35वें अंक का प्रकाशन हो रहा है।

यह आपके दीप्त मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'नवकिरण' ने इस आयाम को प्राप्त किया है। हिन्दी हमारे राष्ट्र की राजभाषा है। हिन्दी पत्रिकाएँ राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अतुल्य भूमिका निभा रही हैं। हिन्दी पत्रिकाएँ कार्यालय कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति के लिए एक मंच के रूप में कार्य कर रही हैं। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारी और कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका का यह अंक भी गत अंकों की भांति 'नवकिरण' पत्रिका के पाठकों के ज्ञानवर्धन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

इस पत्रिका के उद्देश्य की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(समर कांत ठाकुर)

प्रधान निदेशक, लेखा परीक्षा (रक्षा सेवाएं),  
चण्डीगढ़।





## संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 35 वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से सम्बंधित सभी रचनाकारों, पाठकों तथा सम्पादन – सहयोगियों का हार्दिक बधाई देता हूँ।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास तथा हिन्दी के सहज प्रयोग के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका इस कार्यालय से कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन ही नहीं अपितु उनको अपनी साहित्यिक प्रतिभाओं को उजागर करने का अवसर भी प्रदान करेगी।

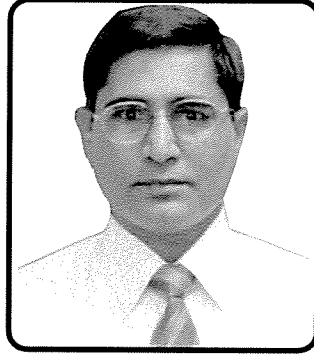
आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से विभाग की गरिमा में बढ़ोतरी होती रहेगी और यह अपने उद्देश्य में सफल रहेगी। मेरी शुभकामनाएं आपकी पत्रिका के साथ हैं कि यह पत्रिका हिन्दी के विकास को अग्रसर करने में कारगर सिद्ध होगी।

(संदीप लाल)

प्रधान – निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय),  
चण्डीगढ़







## संदेश

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका “नवकिरण” के 35 वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। विभागीय पत्रिकाओं के बीच “नवकिरण” ने अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। हिन्दी के प्रचार – प्रसार में “नवकिरण” पत्रिका का निरन्तर सराहनीय प्रयास रहा है।

इस बात में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि हिन्दी भारत की संपर्क भाषा है जिसे भारत के हर हिस्से के लोग बोलते और समझते हैं। प्रशासनिक कामकाज में अंग्रेजी भाषा की जड़ें इतनी गहरी हो गई हैं कि संविधान द्वारा हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के बावजूद आज देश की प्रशासनिक भाषा के रूप में अंग्रेजी का वर्चस्व बना हुआ है। इन तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद कार्यालयी भाषा के रूप में हिन्दी का निरन्तर विकास हो रहा है।

हिन्दी एक समृद्ध और सशक्त भाषा है। इसमें कार्य करके हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए। हिन्दी को बढ़ावा देने और उसके विकास को समर्पित “नवकिरण” पत्रिका का यह अंक भी कार्यालय के कार्मिकों के लिए साहित्यिक व प्रशासनिक काम – काज हिन्दी में करने की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाकार व संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

“नवकिरण” पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कर्ण सिंह)

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा, चण्डीगढ़।





## प्रतिक्रियाएँ

हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'नवकिरण' के वर्ष 2015 के चौतीसवें अंक की प्राप्ति हुई। तदहेतु धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सम्पादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुहृदिपूर्ण एवं सुन्दर बन गई है। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रसासन)

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम,  
मैदामगांव, बेलताला, गुवाहाटी।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'नवकिरण' 34वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। आंतरिक साज सज्जा और पृष्ठों की गुणवत्ता अच्छी है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख एवं रचनाएं सृजनात्मकता से ओत-प्रोत हैं। विशेषकर श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कविता 'बेटा कब आएगा', श्री मदन शर्मा 'राकेश' जी की कहानी 'निर्दोष', श्री सरताज सिंह 'मुसाफिर' की 'गज़लें' अति सराहनीय हैं। संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तमिलनाडु,  
अन्ना सलै, चैन्नै।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचना उच्च स्तरीय ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। विशेषकर श्री आलोक शर्मा की कविता 'मौन', श्री बाल बिहारी प्रजापति की 'क्या विश्वास करूँ', सुश्री सुक्षिति नन्दा की 'काश में एक बेटी रहती', श्री रविन्द्र 'रवि' की रचना 'जब मुश्किलें आएँ', श्री धर्म भाटला 'विकल' की कहानी 'धूप के आंसू' एवं श्री नरेन्द्र बड़गुजर की कविता 'प्रगति का राही' अत्यन्त ही सराहनीय हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित सभी छायाचित्र बहुत ही अच्छी लगी, पत्रिका के पृष्ठों की भी साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है।

सहायक लेखा अधिकारी / प्रशा हिन्दी सेल

एवं सम्पादक 'वन्दे मातरम'

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) पश्चिम बंगाल का कार्यालय,  
कोलकाता।

पत्रिका में समाविष्ट सम्पूर्ण रचनाओं से राजभाषा हिन्दी जहां एक ओर विकास की दिशा में अग्रसर होती हुई प्रतीत हो रही है, वहीं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान से पाठकों को हिन्दी के साहित्य सागर में डुबकी लगाने एवं प्रत्येक रचना का रसास्वादन करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। श्री धर्म भाटला 'विकल' जी की 'धूप के आंसू' श्रीमती नीतू सिंह जी की 'ख्वाहिश' श्री कुमार शर्मा 'अनिल' जी की 'बेटा कब आएगा?' श्री के. के. नन्दा 'अशक' जी की 'तलाश', श्रीमती पुष्पलता गणेश जी की 'ऐ मूर्ख इन्सान' एवं श्रीमती ममता शर्मा जी की 'नियती' विशेष रूप से सराहनीय हैं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, वैज्ञानिक विभाग,  
कोलकाता शाखा।

अर्द्धवार्षिक पत्रिका 'नवकिरण' हस्तगत हुई। आलोक शर्मा की 'मौन' कविता की शैली में नवीनता है, कुमार शर्मा 'अनिल' की कविता 'बेटा कब आएगा', मदन शर्मा 'राकेश' की कहानी 'निर्दोष' सरताज सिंह 'मुसाफिर' की गज़ल, रजनी मोरवाल की कविता 'फ़गुआ', सुक्षिति नन्दा की कविता, के. के. नन्दा 'अशक' की कहानी 'तलाश', गौरी की 'आह ये जिन्दगी' तथा ऊषा शर्मा की 'उपवन' अच्छी रचनाएं हैं। पुष्पलता गणेश, महेन्द्र कुमार सिरौठिया, रविन्द्र रवि, ममता शर्मा, राम सिंह, नरेन्द्र बड़गुजर, राजेश 'पंकज', तजेन्द्र सचदेवा की रचनाएं भी स्तरीय हैं। मनजीत शर्मा 'मीरा' की कहानी 'मक्कार' तकनीक की दृष्टि से आज की कहानी के निकट है। इस पत्रिका में बढ़िया रचनाएं देने के कारण पत्रिका के सम्पादक को बधाई व साधुवाद।

रूप देवगुण

13/676, गोबिन्द नगर, सिरसा।

पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा की गई पुस्तक समीक्षाओं पर आधारित लेख 'नई पहल' बड़ा ही विचारोत्तेजक व प्रेरणादायक है। मदन शर्मा 'राकेश' की 'निर्दोष', के के नंदा की 'तलाश', धर्म भाटला 'विकल' की 'धूप के आंसू' तथा तजिन्द्र सचदेवा की 'संबंधों का चक्रव्यूह' चारों कहानियां बड़ी ही मार्मिक व यथार्थवादी हैं। कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा रचित 'बेटा कब आएगा?', नरेन्द्र गड़गुजर द्वारा रचित 'प्रगति का राही', राजेश 'पंकज' द्वारा रचित 'उंगलियां' तथा नीतू सिंह की 'स्वाहिश' सहित सभी कविताएं भी भावप्रवण हृदयस्पर्शी बन पड़ी हैं। आशिष कुमार का हास्य व्यंग्य 'नटूरे' भी अति मनोरंजक है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

सहायक लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू टी चण्डीगढ़।

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 34 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, तथा कहानियां रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री कुमार शर्मा 'अनिल' की कविता 'बेटा कब आएगा', श्री मदन शर्मा राकेश की कहानी 'निर्दोष' श्री महेन्द्र कुमार सिरौठिया की कविता 'परिदे', श्री रविन्द्र 'रवि' की कविता 'जब मुश्किलें आए' सुश्री ममता शर्मा की कविता 'नियति', श्री धर्म भाटला 'विकल' की कहानी 'धूप के आंसू', श्री बचित्तर सिंह आनंद का लेख 'तंदुरुस्त रहना आपके हाथ' आदि सभी रचनाएं सुंदर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में दिए कार्यालयीन चित्र पत्रिका की सुंदरता को बढ़ाते हैं। रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल एवं सुन्दर संपादन हेतु हार्दिक बधाई।

अनिल त्रिपाठी

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा) - II, महाराष्ट्र

नागपूर

पत्रिका में निहित सभी रचनाएं सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं सारी रचनाएं सराहनीय और प्रेरणात्मक हैं। 'स्वस्थ शरीर है सबसे बड़ा खजाना', 'मक्कार', आदि लेख अच्छे लगे। 'मौन', 'अगर' कविताएं अच्छी हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की आशा करते हैं।

आईशा शेख

सहायक अधिकारी, रा. भा. अनुभाग,

महालेखाकार (ले एवं ह) का कार्यालय, आन्ध्र प्रदेश तथा तेलंगाना,

हैदराबाद।

पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन लुभाने वाली हैं। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विशेषकर श्री कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा रचित कविता 'बेटा कब आएगा', श्री रविन्द्र 'रवि' की कविता 'जब मुश्किलें आए', श्रीमती ममता शर्मा की कविता 'नियति' एवं 'नयनों का नीर-नारी', श्री बचित्तर सिंह आनंद का लेख 'तंदुरुस्त रहना आपके हाथ', श्री मदन शर्मा राकेश का 'निर्दोष' एवं मेहरा पी एस का 'इंसान बनने का काढ़ा' आदि रचनाएं अत्यधिक मनमोहक एवं विचारात्मक हैं। इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी,

प्रधान महालेखाकार (ले व ह) का कार्यालय, केरल,

तिरुवनंतपुरम।

पत्रिका का प्रस्तुत अंक उसक उत्कृष्ट कलेवर, मुद्रण, साज-सज्जा, छायाचित्र तथा श्रेष्ठ रचनाओं के समावेश के कारण अत्यन्त ही आकर्षक एवं रोचक बन पड़ा है। श्री मदन शर्मा राकेश की रचना 'निर्दोष', श्री महेन्द्र कुमार सिरौठिया की रचना 'परिन्दे' श्री रविन्द्र 'रवि' की रचना 'जब मुश्किलें आए', श्रीमती मनजीत शर्मा 'मीरा' की रचना 'मक्कार' एवं सुश्री नीतू सिंह की रचना 'स्वाहिश' बहुत ही प्रशंसनीय है।

हिन्दी अधिकारी, राजभाषा कक्ष,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक),

राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 34 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट व ज्ञानवर्धक हैं। हिन्दी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

एस. तंबी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी कक्ष,

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रसार-प्रसार हेतु प्रकाशित पत्रिका 'नवकिरण' का 34 वां अंक प्राप्त हुआ। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं रुचिकर एवं सराहनीय हैं।

हिन्दी अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) का कार्यालय, कर्नाटक,  
बैंगलूर।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। विशेषकर पत्रिका में कुमार शर्मा 'अनिल' द्वारा लिखी गयी कविता 'बेटा कब आएगा', मदन शर्मा 'राकेश' दूसरा लिखा गया लेख 'निर्दोष, बाल बिहारी प्रजापति द्वारा लिखी गयी कविता 'क्या विश्वास करूं', के के नन्दा द्वारा लिखा गया लेख 'तलाश', राजेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखा गया लेख 'स्वस्थ शरीर है सबसे बड़ा खजाना' और धर्म भाटला 'विकल' द्वारा लिखा गया लेख 'धूप के आसू' सर्वाधिक रोचक व प्रेरणादायी हैं। पत्रिका में विभिन्न लेख व कविताएं बहुत अच्छी हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत लुभावना है।

सहायक लेखा अधिकारी/राजभाषा

महालेखाकार का कार्यालय (लेखा व हकदारी) - 1, महाराष्ट्र,  
मुम्बई।

पत्रिका अत्यंत, आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत की गई है। संकलित समस्त रचनाएं उत्कृष्ट हैं। विशेष रूप से श्री सुनहर सिंह का लेख 'लेख 8782 लोक निर्माण नकद प्रेषण प्राप्ति एवं भुगतान की ब्राडशीट्स', मदन शर्मा 'राकेश' की 'निर्दोष', सुश्री नीतू सिंह की 'स्वाहिश' तथा मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'मक्कार' प्रशंसनीय हैं।

लेखा अधिकारी/हिन्दी,

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), प्रथम  
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

यह पत्रिका आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों की अमानत है। आपकी प्रत्येक समालोचना, सुझाव हमारा पथ प्रदर्शित करता है।  
—संपादक

हिन्दी का उद्देश्य यही है ,  
भारत एक रहे अविभाज्य ,  
ये तो रूस और अमरीका  
जितना है उसका जन राज्य ।  
गिरा आप गूंगी असमर्थ ,  
एक भारती बिना हमारी भारतीयता का क्या अर्थ।  
—मैथिलीशरण गुप्त



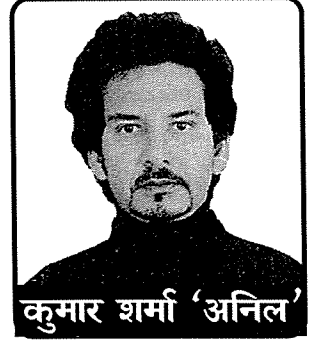
## नवकिरण अनुक्रमणिका

| क्रम० | रचना                                  | लेखक                         | पृष्ठ |
|-------|---------------------------------------|------------------------------|-------|
| 1.    | संपादकीय                              | कुमार शर्मा 'अनिल'           | 1     |
| 2.    | भविष्य वक्ता                          | अमरजीत 'अमर'                 | 2     |
| 3.    | बहुत मुश्किल है आदमी का इन्सां होना   | के.के. नन्दा                 | 5     |
| 4.    | पिता कहीं नहीं जाते                   | कुमार शर्मा 'अनिल'           | 8     |
| 5.    | सिर्फ पिता जैसा                       | कुमार शर्मा 'अनिल'           | 8     |
| 6.    | चावल, बाजरा और टोटका                  | मनजीत शर्मा 'मीरा'           | 9     |
| 7.    | कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप           | संजीव कुमार                  | 16    |
| 8.    | हमारी बेटी                            | रविन्द्र 'रवि'               | 18    |
| 9.    | शेरों का वानप्रस्थ                    | राजेश 'पंकज'                 | 19    |
| 10.   | जय घोष                                | कुलदीप कुमार मेहता           | 23    |
| 11.   | मेरी सहेली                            | सुक्षिति नन्दा               | 24    |
| 12.   | कोशिश करने वाले की कभी हार नहीं होती  | राजेन्द्र कुमार शर्मा        | 28    |
| 13.   | वो औरत                                | नीतू सिंह                    | 29    |
| 14.   | भाग्य                                 | आशीष कुमार                   | 30    |
| 15.   | चाँदनी रातें                          | बाल बिहारी प्रजापति          | 31    |
| 16.   | संयुक्त परिवार                        | आलोक शर्मा                   | 31    |
| 17.   | ध्यान से पढ़ना आंखों में पानी आ जाएगा | जोगिन्द्र सिंह               | 32    |
| 18.   | यादें                                 | अरूण कुमार वशिष्ठ            | 33    |
| 19.   | ए दोस्त, तुम मुझे खो दोगे।            | चाँद सिंह                    | 33    |
| 20.   | बहुत सोखा बहुत ओखा                    | राजकुमारी राज                | 34    |
| 21.   | भारत देश महान                         | नरेन्द्र कुमार 'बड़गुजर'     | 34    |
| 22.   | लोग अब मुखौटा नहीं लगते               | सुरेन्द्र कुमार              | 35    |
| 23.   | यह कैसी मुस्कान                       | सुरेन्द्र कुमार              | 35    |
| 24.   | आत्मग्लानि                            | समीर कुमार                   | 36    |
| 25.   | राजभाषा हिन्दी की प्रगामी प्रयोग      | रिपोर्ट : हिन्दी कक्ष        | 40    |
| 26.   | खेलकूद/साँस्कृतिक गतिविधियाँ          | रिपोर्ट : कल्याण कक्ष        | 41    |
| 27.   | अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्द            | संजीव कुमार                  | 43    |
| 28.   | सेवानिवृत्ति रिपोर्ट                  | गिरधारी लाल शर्मा, स. ले. अ. | 45    |



## सम्पादकीय

‘नवकिरण’ का नवीनतम अंक आपके सुधि हाथों में है और मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। तीस वर्ष हो चुके हैं मुझे इस पत्रिका से जुड़े हुए। राजभाषा हिन्दी के प्रति एक सकारात्मक माहौल बनाने और कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से ‘नवकिरण’ का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया था। अपने इस उद्देश्य को पूरा करने में ‘नवकिरण’ पूरी तरह से सफल रही है। पत्रिका ने कार्यालय में न केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का महत्वपूर्ण कार्य किया अपितु कार्मिकों में हिन्दी भाषा के प्रति उनकी मानसिकता को भी बदला।



कुमार शर्मा ‘अनिल’

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में कठिनाई अथवा उसे अंग्रेजी से कमतर मानने अथवा दुरुह मानने की सोच को भी बदलने में पत्रिका ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह ‘नवकिरण’ ही है जिसने अनेक कर्मिकों को मूल रूप से हिन्दी में लिखने को प्रेरित किया। इस बात में मतभेद नहीं है कि विभागीय पत्रिकाओं ने कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पत्रिका का यह अंक भी अपने इसी महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति करता है। हिन्दी हमारी राजभाषा है। हिन्दी में कार्य करना हम सभी का नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। बहुत बार यह प्रश्न उठाया जाता रहा है कि हिन्दी में सरकारी कामकाज करना उसकी पारिभाषिक शब्दावली के कारण कठिन है। परन्तु इसमें बिल्कुल सच्चाई नहीं है। राजभाषा नीति में यह स्पष्ट निर्देश है कि सरकारी कामकाज में सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिये। भाषा को सरल और सहज बनाने के लिए हिन्दी में सरकारी कामकाज करते समय यदि अंग्रेजी भाषा के शब्द भी आ जायें तो उन्हें देवनागरी में लिखने में कोई हिचक नहीं है। यह राजभाषा नीति के अन्तर्गत मान्य भी है।

अन्त में, मैं अपने उच्च अधिकारियों का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने हमेशा राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्यालय में सकारात्मक माहौल बनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया। मैं हिन्दी पत्रिका ‘नवकिरण’ से जुड़े अपने सहयोगी, रचनाकार और पाठकों का भी हृदय से आभारी हूँ जिनके सहयोग के बिना यह संभव नहीं होता कि इतने सुंदर कलेवर में पत्रिका प्रकाशित हो पाती।

जय हिन्द! जय हिन्दी

कुमार शर्मा ‘अनिल’  
संपादक

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं  
प्रशासन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

— संपादक

## भविष्य वक्ता



अमरजीत 'अमर'

1968 की बात है जब मेरा बी ए तृतीय वर्ष का वार्षिक परिणाम घोषित हुआ। मेरे लिए धक्का लगने जैसी बात थी क्योंकि मेरी एक ऐसे विषय में कम्पार्टमेंट थी जिस पर मुझे भरोसे के साथ साथ गर्व भी था। अपनी पढ़ाई के साथ साथ मैं वही विषय दसवीं तक के कमज़ोर बच्चों को भी पढ़ाता था। उन्हें मुझ पर पूरा भरोसा था। एक प्रकार से मैं उनके लिए मसीहा था चूंकि पढ़ाता भी मुफ्त था। वह विषय था अंग्रेज़ी जिसमें मैं स्वयं फेल था। मैं चुप चुप और खिन्न सा रहने लगा। लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया। संयोग ही कहिए कि इन्ही दिनों में नगर के सरकारी अस्पताल में कार्यरत एक बहनजी (स्टाफ नर्स) के बेटी बेटे को भी अंग्रेज़ी पढ़ाया करता था और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ रहा था। मेरा उत्तरा हुआ चेहरा देख कर बहनजी ने कारण पूछा। मैंने कुछ देर ना नुकर करने के बाद अपनी चुप्पी का राज़ उन पर खोल ही दिया। सुनकर वे मुस्कुराई और सहजता से बोलीं कि उनके पास इसका समाधान है। वे आगे बोली कि जालंधर में एक प्रख्यात ज्योतिषी अर्थात् भविष्यवक्ता हैं और वे उनके जानकार भी हैं। वे मुझे उनके पास लेकर चलेंगी और सारी समस्याओं का निवारण करवाकर ही दम लेंगी। बस उनकी फीस दो रुपए है। इसके बाद एक और चुप्पी छा गई। यह शायद मेरी अंदरूनी कशमकश का परिणाम था। मेरे पास दो रुपए भी नहीं थे पंडितजी को देने के लिए। और भी कारण थे जो मैं बताना नहीं चाहता था। सबसे बड़ा कारण था कि मेरा इन बातों में विश्वास ही नहीं था।

इसलिए मैंने शालीनता से मना कर दिया। खैर बहनजी ने बड़ी ममता भरे लहजे में बार बार अनुरोध किया तो मैं अनमने भाव से मान गया। किन्तु मैंने कुछ शर्तें रख दी। पहली यह कि मेरे आने जाने का खर्च वे वहन करेंगी। दूसरी यह कि पंडित जी की फीस भी वही देंगी। मैंने सोचा कि वे मना कर देंगी किन्तु नहीं। वे मेरी सोच के विपरीत सारी शर्तें मान गईं।

जालंधर जाने का एक दिन तय हुआ और मैं बहनजी के साथ अपनी समस्याओं का हल और भविष्य जानने के लिए पंजाब रोडवेज़ की बस से जालंधर पहुँच गया। रिक्शा लेकर हम पंडित जी की शाला में पहुँच गए। उनका आसन घने बाज़ार के बीचों बीच बने एक चौबारे में था। वहां वे विराजमान थे। चेहरे पर बड़ा नूर था अथवा मुझे ऐसा लग रहा था। माथे पर लम्बा सा तिलक शोभ्यमान हो रहा था। चौबारा जिज्ञासुओं से खचाखच भरा हुआ था। हमारे बैठने के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। किन्तु मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब पंडित जी ने हमारी ओर आँख उठा कर निहारा और बोले कि बहन जी ने पहले ही बोल रखा था इसलिए आप दोनों (अर्थात् हम दोनों) मेरी बाईं और रक्षित स्थान पर बैठ जाएं। और हैरानी हुई जब उन्होंने सबसे पहले हमें बुला लिया यह कह कर कि ये लोग दूर से आए हैं। मैं उनके सामने नतमस्तक बैठा था और वे एक काली स्लेट पर कुछ पंचांग सा बना रहे थे। फिर तपाक से मुझे उन्होंने किसी एक अंक पर उंगली रखने को कहा। मैंने रख दी। कुछ रुक कर किसी फूल का नाम लेने को कहा। मैंने गुलाब का नाम ले दिया। एक पल मौन रहने के बाद वे बोले कि तुम्हारे पिताजी का नाम क अक्षर से शुरू होना चाहिए और फिर जिज्ञासा से मेरी ओर देखने लगे। बात सही थी किन्तु मैं यह जानने नहीं आया

था। सो मैंने कह दिया कि यह तो मैं जानता हूँ। जो मैं नहीं जानता अथवा जिस बात की मुझे जिज्ञासा है वह बताइए। वे शायद इस बात के लिए तैयार नहीं थे अथवा ऐसी बातें किसी ने पहले कभी पूछी नहीं थी। उनके मुखमंडल पर हैरानी एवं असमंजस के भाव मैं पढ़ पा रहा था। अपनी झेंप मिटाने के लिए उन्होंने अगला प्रश्न किया। बोले - क्या तुम दसवीं पास हो। मैं शायद इस बात के लिए भी तैयार नहीं था। मैं बोल पड़ा - नहीं। यह सुनते ही पंडितजी की बाछें खिल उठीं। वे कुछ बोले उससे पहले ही मैं बड़े भोलेपन से बोल उठा - मेरी बी ए फाइनल में कम्पार्टमेंट है और मैं बेकार हूँ। मुझे काम की भी तलाश है। अब तो शायद परेशान होने की बारी पंडित जी की थी। वे पंचांग को बार बार ध्यान से देखने लगे। बोल - अभी तो लम्बा कष्ट है। चार साल तक पढ़ाई में विघ्न है। जब पढ़ाई में ही विघ्न है तो नौकरी का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सच कहूँ - मैं भीतर तक हिल सा गया। हम घर में छः लोग खाने वाले थे और कमाने वाले अकेले पिताजी थे। मैं नौकरी करके उनका बोझ कम करना चाहता था। मेरी बोलती बंद हो गई और मैंने बहनजी को चलने का इशारा किया। बहनजी ने थोड़ा उठने का उपक्रम किया। उनको यूँ उठते देख कर पंडित जी थोड़ा विनम्र भाव से बोले - ज़रा बैठिए बहनजी। आप इस लड़के के साथ आई हैं तो आपको निराश नहीं जाने दूँगा। मेरे पास इसका उपाय है। मेरे कान खड़े हो गए। मुझे 21 दिनों तक इस लड़के के लिए जाप करना पड़ेगा। 21 रुपए लगेंगे। जाप मैं अपनी इन्द्र नगर वाली कोठी पर ही करूँगा। फिर एक धागा बनाकर दूँगा। उसे यह लड़का अपने बाजू में बाँध लेगा। मुझे परीक्षा केन्द्र का नाम और इसका रोल नम्बर चाहिए होगा। इसका कार्य सफल होगा। अब निश्चित होकर आदमपुर लौट जाइए। कल्याण हो। मैं जैसे तैसे करके बहनजी के साथ आदमपुर लौट आया। मैं जीवन में शायद पहली बार इतनी बुरी तरह किसी नकारात्मक सोच से प्रभावित हुआ। परिणाम निश्चित रूप से हिला देने वाला रहा। मैं गुम सुम रहने लगा। मैंने बच्चों को पढ़ाना भी छोड़ दिया। कारण ना तो मेरी समझ में आ रहा था और ना ही मैं किसी को कुछ बता पा रहा था। मैंने कम्पार्टमेंट की परीक्षा के लिए तैयारी छोड़ दी। मेरे भीतर एक ही विचार उथल पुथल मचा रहा था कि जब चार साल तक पास ही नहीं होना तो पढ़ाई की तैयारी का क्या लाभ। सच कहूँ तो आज जान पाया हूँ कि मैं घोर अवसाद के शिकंजे में फँस चुका था और मुझे उससे निकालने वाला कोई नहीं था। मुख्य कारण - घर में अनपढ़ता का वातावरण। मां अंगूठा टेक और पिताजी जिन्हें मैं ना जाने क्यों चाचा कह कर पुकारता था केवल उर्दू की छः जमात पास थे सो अंग्रेज़ी से कोसों दूर। ऐसे में मुझे ढाढ़स कौन बाँधाए और तैयारी के लिए प्रेरित कौन करे। हां चाचाजी कुछ कुछ अंतराल के बाद पूछ अवश्य लेते थे कि बेटा तैयारी कर रहे हो ना। बस इतना ही। मैं जब तैयारी कर ही नहीं रहा था तो क्या कहता। बस ना में सिर हिला देता। अच्छा बेटा तेरी मर्जी - कह कर वे अपने काम पर निकल जाते। देखते ही देखते दिन बीतते गए और डेट शीट आ गई। 20 और 21 सितम्बर 1968 को मेरे अंग्रेज़ी के ए और बी पेपर होने थे। मैंने डेट शीट के बारे में चाचा को बता दिया किन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि मैं पेपर देने नहीं जाऊँगा।

16 सितम्बर का दिन शुरू हुआ अत्यंत कसमसाहट के साथ। जाऊँ या ना जाऊँ। अचानक भीतर से एक आवाज़ आई - जाना चाहिए। आगे जो भी होगा देखा जाएगा। क्योंकि अवसाद ने पीछा नहीं छोड़ा था अतः जालंधर के लिए चल पड़ा। वहां आबादपुरा में रहते सहपाठी जगन्नाथ के पास पहुँच गया। वह मुझे कवि कह कर बुलाया करता था। उसका भी हाल लगभग मेरे जैसा ही था। पर वह जोश में था मैंने अपने अवसाद की चादर उसके ऊपर भी



थोड़ी थोड़ी ओढ़ा दी। उसे मानसिक तौर पर पेपर ना देने के लिए राजी कर लिया और हम खा पी कर बेफिक्र हो कर सो गए। किन्तु आश्चर्य - प्रातः उठते ही हम दोनों ने एक दूसरे की ओर मूक भाव से देखा और निर्णय ले लिया कि पेपर देंगे। उसके साइकिल पर हम दोनों डी ए वी कालेज (जहां हमारा परीक्षा केन्द्र था) की ओर निकल पड़े रास्ते भर दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला। दोनों दिन अर्थात् 20 एवं 21 सितम्बर 1968 हम दोनों ने ऐसा ही किया। पेपर दिए। उसी दिन मैं आदमपुर के लिए निकल पड़ा। लगभग 12 बजे के करीब मैं जैसे ही अपने कस्बे के अस्थाई से बस स्टैंड पर बस से उतरा मेरी मुलाकात कस्बे के ही पुश्तैनी लम्बरदार सरदार उजागर सिंह जी - जो नगरपालिका के प्रधान भी थे से हो गई। लगा जैसे वे मेरी ही प्रतीक्षा कर रहे थे।

जैसे लपकते हुए उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और बुजुर्गी अंदाज़ में बोले - ओए अमरजीत तूने क्या नगरपालिका में टैक्स कलेक्टर की आसामी के लिए आवेदन दे रखा था। मेरे हां कहते ही वे तपाक से बोले - तां चल फिर तेरी इंटरव्यू लईए। यह सब कुछ मेरे लिए अप्रत्याशित था। मैं हक्का बक्का रह गया। खुश भी था और हैरान भी। मेरा दिल जोरों से धड़कने लगा और मैं काँपते हुए पैरों से उनके साथ टाऊनहाल की ओर चल दिया। रास्ते भर यही सोचता रहा कि शायद मेरे साथ मज़ाक किया जा रहा था। पर इसका कारण मेरी समझ से परे था। खैर हम टाऊनहाल पहुँचे। सरदारजी ने चपरासी को कह कर आनन फानन में उप प्रधान और दो और कौंसलरों को बुलवा लिया। फिर सैक्रेटरी सरदार बेअंत सिंह से बोले - कार्रवाई शुरू करो। फिर सबने आँखों में कुछ बात की और वाइस प्रेज़िडेंट सपाट लहजे में मुझसे बोले - असीं तैनू कंसौलीडेटिड सैलरी 105 रूपए महीना दिआंगे। मंजूर है कि नहीं। मैंने सोचने में अधिक देर नहीं लगाई और हां कर दी। बस फिर क्या था। सचिव साहिब ने नियुक्ति पत्र तैयार किया और मुझे थमा दिया। यह भी कहा कि अभी से नौकरी शुरू कर दो। मुझे कुछ सूझ ही नहीं रहा था अच्छा अथवा बुरा कुछ नहीं पता। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सब सच था। कारण वही ज्योतिषी की भविष्यवाणी कि अभी चार साल तक पढ़ाई में रुकावट है और नौकरी का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। खैर मैंने 21 सितंबर, 1968 अपरान्ह से ही नौकरी शुरू कर दी। अब मैं पछतावे की आग में बुरी तरह जल रहा था। काश मैंने भविष्यवाणी पर ध्यान ना देकर पेपर के लिए अच्छी तैयारी कर ली होती तो शायद परिणाम कुछ और होते। अब क्या हो सकता था। करते करते समय बीतने लगा किन्तु मैं अभी पूरी तरह से कुण्ठामुक्त नहीं हो पाया था। फिर वह दिन भी आ गया जिसके कारण मैं अवसाद में था। कम्पार्टमेंट का परिणाम अखबार में आ गया। मैंने धड़कते दिल से अखबार खंगाला। मेरा रोल नम्बर उसमें था। मैं पास हो गया था। मैंने खुशी को अपने तक सीमित रखा। किसी को नहीं बताया। यहां तक कि चाचाजी को भी नहीं। मुझे किसी और चीज़ का इंतज़ार था।

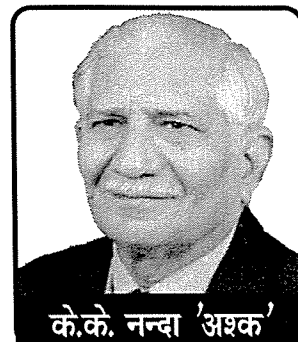
अंततः पंजीकृत डाक से जब स्नातक की डिग्री आई तो मेरी जान में जान आई। मैंने तब सबसे पहले चाचाजी को इसकी सूचना दी फिर सबको। मैं तृतीय श्रेणी में पास हो गया था। पंडितजी पर गुस्सा था। किन्तु कुछ कर नहीं सकता था। उनकी दुकानदारी का सवाल जो था।

संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जाने के बाद किसी को उसके विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार नहीं है ।

- कृष्णा मेनन

## बहुत मुश्किल है आदमी का इन्सां होना

हल्की-हल्की बरसात हो रही थी। यदि यह कहा जाए कि फुहार पड़ रही थी तो गलत नहीं होगा। मौसम बड़ा सुहावना था। फुहार पड़ने से हवाओं में पैदा हुई ठंडक दिल को एक अजीब सा सकून दे रही थी। छोटी-छोटी काली बदलियाँ आकाश में इस प्रकार तैर रही थी मानो सागर के नीले पानी में छोटी-छोटी कश्तियाँ पानी की लहरें पीछे छोड़ती हुई इधर-उधर भागी जा रही हों। या फिर कुदरत ने नीले आकाश में छोटे-छोटे फव्वारे लगा दिए हो जो धरती पर अपनी फुहारों से पर्वतों को, पर्वतों पर उगे वृक्षों को, फूलों और कलियों को और इस धरती पर बसने वाले हर जीव को नहला रहे हों। हर ओर बहार का समा था। फूलों की पत्तियों पर ठहरी हुई पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदें मोती बन कर चमक रही थी हल्की सी हवा से वृक्षों के पत्तों से गिरते हुए पानी के कतरे जैसे धरती पर मोती गिर रहे हों। हर ओर भीगा-भीगा समां, कलियों से अटखेलियाँ करती हवाएँ, कोयलों के कू-कू के राग और वृक्षों के पत्तों की सरसराहट से पैदा होता संगीत स्वर्ग का सा नज़ारा पेश कर रहे थे।



हल्की-हल्की फुहार में भीगते हुए मैं मस्ती की हालत में न जाने कहाँ चला जा रहा था कि एक फिल्मी गीत के बोल के चन्द शब्द, जो किसी घर में चलने वाली टी. वी. या रेडियो से बाहर आ रहे थे मेरे कानों से रस घोलने लगे।

न हिन्दू बनेगा, न मुसलमान बनेगा,  
इन्सान की औलाद है इन्सान बनेगा।

यह सुनते ही मेरे होंठों पर एक हल्की सी मुस्कराहट फैल गई यह सोच कर कि इस धरती पर इंसान है कहाँ जिसके बनने की इच्छा प्रकट की गई है। इस धरती पर बसने वाला हर व्यक्ति कुछ न कुछ है परन्तु, इन्सान नहीं। किसी को पूछ कर देख लो कोई कहे गा मैं हिन्दू हूँ, कोई कहेगा मैं मुस्लमान हूँ, कोई खुद को सिख तो कोई ईसाई कहेगा और कोई स्वयं को बुद्ध, जैन और न जाने और क्या-क्या। हर कोई किसी मज़हब या जाति से जुड़ा हुआ। कोई नहीं कहेगा, “मैं इन्सान हूँ।” जब कोई स्वयं को इन्सान कहने पर राज़ी ही नहीं तो फिर यह जीव इन्सान कैसे बनेगा। पक्षी.....पक्षी है, जानवर.....जानवर है, वृक्ष .....वृक्ष है परन्तु इन्सान.....इन्सान नहीं बाकी न जाने क्या क्या है? मिर्ज़ा गालिब उर्दू के एक बहुत बड़े शायर हो गुज़रे हैं। वह कहा करते थे

‘बहुत मुश्किल है आदमी का इन्सां होना’

मैं गलियों में घूमता हुआ बाज़ार में निकल आया। बाज़ार में से गुज़रते हुए एक ढाबा नज़र आया। मैंने सोचा कि ऐसे सुहावने मौसम में क्यों न यहां बैठ कर चाय का मज़ा लिया जाए। ढाबे में बहुत भीड़ थी। बहुत से लोग चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। कोई नाश्ता कर रहा था तो कोई अपने मित्रों के साथ गप्पें हाँक रहा था। हल्का-हल्का शोर सा मचा हुआ था। कई नौजवान लड़के-लड़कियाँ आपस में गुंफ बना कर बैठे हुए थे। आपस में खूब गप बाज़ी हो रही थी। हँसी के फव्वारे छूट रहे थे। मुझे ख्याल आया कि थोड़ी दूर ही तो कालिज है। शायद खाली पीरियड में लड़के...लड़कियाँ अपने अपने मित्रों के साथ यहां चाय पीने और गप-शप लड़ाने आ जाते होंगे। अभी मैं इधर-उधर नज़रें दौड़ा ही रहा था कि एक टेबल पर मेरी नज़र पड़ी जहां दो कुर्सियाँ खाली पड़ी थीं परन्तु कठिनाई यह थी कि वहां दो



## पिता कहीं नहीं जाते

पिता.....

जब भी जाते थे

घर से बाहर

मिल जाती थी हमें

शरारतें करने की छूट

गंदी नालियों के किनारे

कचे खेलना, गिल्ली-डंडा

झगड़ना, वो पतंगों की लूट

मां कहीं नहीं जाती थी

सब कुछ देखते-सुनते भी

कभी पकड़ नहीं पाती थी

तब भी वो

हम बच्चों का झूठ

पिता.....

जब भी जाते थे

घर से बाहर

वे लौटते जरूर थे

उनके लौटते ही

घर में छा जाती थी शांति

बच्चों में अनुशासन

फिर भी पकड़ लेते थे वे

किसने की हैं, कितनी शरारतें

हम बोल ही नहीं पाते थे झूठ

पिता.....

उस दिन भी गए थे

घर से बाहर

तब से

घर में शांति है

एक नीरव शांति

हम सभी को लगता है

वो लौट सकते हैं

कभी भी।

पिता.....

कहीं नहीं जाते

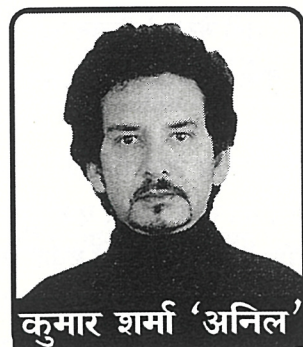
बाहर जाने पर भी

बसे रहते हैं वो

घर में, स्मृति में

श्वास में, लहू में।

---x---



## सिर्फ पिता जैसा

मेरे सारे सपने और भय

माँ से लिए गये थे

महान आदर्शों, सफलता के

सारे सपने

उसी ने सौंपे थे मुझे ।

डराती थी अपने तरीकों से

जिससे बचा रहूँ मैं

तमाम बुराइयों से ।

पिता ने

कभी नहीं दिखाये मुझे सपने

न भयभीत किया

बुराइयों के प्रति

न ही दिया कभी

कोई उपदेश

जीवन- जीने की कला पर ।

मैं उन्हें देखता था सिर्फ

संघर्ष करते

जीवन से जूझते ।

मेरे सारे सपने और भय

जो माँ की धरोहर थे

किसी काम नहीं आये मेरे

सारे आदर्श किताबी निकले

आज मैं जो भी हूँ

पिता की बदौलत हूँ

और अब बनना चाहता हूँ

सिर्फ पिता जैसा।



## चावल, बाजरा और टोटका



मनजीत शर्मा 'मीरा'

सरमाया साहब को इस शहर में बसे लगभग दस बरस हो चुके हैं। परिवार में पत्नी और चार बेटे हैं। जिंदगी बड़े मजे से गुजर रही है। कोई कमी नहीं और ना ही अब तक कोई गम पास फटका है। पर पिछले तीन दिनों से उनकी पत्नी साहिब कौर बड़ी परेशान है। बार-बार अपने चारों बेटों की बलाएं लेती फिर रही है। कभी उन्हें चूमती, कभी दुलारती और कभी जली हुई लाल मिर्चे उनके सिर के ऊपर से वारकर उन्हें जमीन पर फेंक चप्पल से खूब कूटती। यह शामत मिर्चों की नहीं किसी और की आती है, वे जानते हैं। अब तो रोज ही घर में धुआं-धखड़ रहने लगा है।

सरमाया साहब सोचते औरतों के वहम हैं। इतिहास के पन्ने पलटकर देख लो, हर मां अपने बच्चे को बुरी नजर से बचाने के लिए कई क्रिया-कलाप करती रही है। फिर वे चाहे गंडा-ताबीज हों, तंत्र-मंत्र हों, साधु-संतों के डेरों पर बैठकें हों या फिर टोने-टोटके। शायद इसीलिए उनकी पत्नी भी ऐसा करने लगी हो। पर सवाल यह था कि आजकल ही क्यों?

सरमाया साहब खुले विचारों वाले भले आदमी हैं और सत्कर्म को ही पूजा मानते हैं। तांत्रिकों, साधु-संतों, ज्योतिषों वगैरह के मायाजाल में फँस अपना घर उजाड़ते लोगों को पत्र-पत्रिकाओं में बहुत बार पढ़ा है उन्होंने। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी विभिन्न कार्यक्रमों का प्रसारण कर भोले-भाले लोगों को इन मायावी लोगों से बचने के लिए हमेशा सचेत करता रहा है। पर लोग भी पता नहीं कौन-सी मिट्टी के बने होते हैं। एक भुगत चुका होता है तो दूसरा उस दलदल में फँसकर भुगतने को हमेशा तैयार बैठा होता है। अंधविश्वास और रूढ़ियों में फँसकर ये दकियानूसी लोग सहज ही इन कथित मायावी लोगों के जाल में फँसकर अपना धन, बच्चे, जायदाद, इज्जत और मन की शांति दांव पर लगा बैठते हैं। पुत्र प्राप्ति हेतु बलि के बहाने दूसरों के बच्चों की नृशंस हत्या स्वयं कर या दूसरों से करवाकर पुत्र-रतन तो प्राप्त कर नहीं पाते जिंदगी भर के लिए सलाखों के पीछे जरूर पहुँच जाते हैं। फिर भी देखने वालों को उनके अनुभवों से अक्ल नहीं आती। मत मारी जाती है उनकी। सिर्फ शक के आधार पर औरतों को डायन घोषित कर उन्हें ईंट-पत्थरों से मार दिया जाता है। निर्वस्त्र कर सरेराह घुमाया जाता है। आँखें फोड़ दी जाती हैं। जीभ काट ली जाती है। बलात्कार किए जाते हैं। दुधमुहे बच्चों की छाती पर पैर रखकर तांत्रिकों द्वारा इलाज के नाम पर ठगा जाता है। बच्चे रोते-तड़पते रहते हैं और मां-बाप, परिजन और समाज के लोग हाथ बांधे बेवकूफों की तरह खड़े रहते हैं। दूसरों की बेशक जान चली जाए पर अपनी जेब भरनी चाहिए। जब ऐसी ही कोई न्यूज़ देख रहे होते हैं वे तो उनका मन करता है कि टी. वी. से बाहर निकालकर एक-एक को पकड़कर धुन दें। बहुत कोपत होती है उन्हें।

कोपत तो उन्हें तब भी बहुत होती है जब छोटे-छोटे शहरों, कस्बों, गांवों के अलावा बड़े-बड़े विकसित देशों के लोग भी ऐसे अंधविश्वासों में विश्वास करते दीखते हैं। अब अमेरिका की ही बात लो, वहाँ के धनवान लोग सड़क पर मिली एक पेन्नी को अपनी जेब में दिनभर इसलिए रखते हैं कि वह उनके लिए सौभाग्य लेकर आएगी। म्यांमार वाले तो हाथी की पूंछ के कुछ बाल अपने घर में ले आते हैं कि इससे शैतानी शक्तियाँ दूर रहेंगी। चीनवासियों द्वारा चीजों की संख्या 8 व 9 रखे जाने का हर संभव प्रयास किया जाता है क्योंकि चीनी भाषा में इन अंकों की ध्वनि पर्याप्त और समृद्ध, शब्दों जैसी होती है। रूसी लोग अमावस्या के दिन बाल और नाखून काटना अच्छा समझते हैं। इजरायल वाले किसी बुरी चर्चा के बाद इस तरह थूकना पसंद करते हैं कि दूसरों को भी पता चल जाए। उनका मानना है कि ऐसा करने से वे उस बुरी चीज से सुरक्षित रहेंगे। भारतवासी किसी और चीज में अव्वल हों चाहे ना हों पर अंधविश्वासों में सबसे ऊपर हैं। दशहरे पर रावण के जले हुए पुतले की लकड़ी लाकर घर में रखेंगे ताकि

बच्चे रात में डरें ना। डरपोक कहीं के। छींक आ जाए तो घर से बाहर नहीं निकलेंगे बेशक बस छूट जाए। अच्छा भला साफ - सुथरा रास्ता छोड़कर झाड़ - झंखाड़ पर चल देंगे गर बिल्ली रास्ता काट जाए। और इन सबसे परे जापान वाले तो यहां तक सोचते हैं कि गर्भवती स्त्री यदि शौच के लोटे को अच्छी तरह मांजकर चमका दे तो उसे स्वस्थ और सुंदर शिशु की प्राप्ति होगी। भई, तरीका तो आसान है पर..... ?

पर सरमाया साहब को ना तो इन बातों में विश्वास है और ना ही कोई दिलचस्पी। हां, दिलचस्पी इस बात में जरूर हो आई है कि सुबह 5 बजे बिस्तर त्यागने वाली साहिब कौर आज 3 बजे ही क्यों उठ गई? घर का मुख्य द्वार उसने पूरा क्यों खोल दिया? सुबह - सवेरे स्नान कर जपुजी साहिब का पाठ करने वाली उनकी सुघड़ पत्नी मुख्य द्वार के पास कुर्सी डालकर बैठी। क्रोशिए से थालपोश बुनने क्यों बैठ गई? उन्हें बहुत हैरानी हो रही है कि माजरा क्या है। वे स्वयं भी उठकर बैठ गए। लौट - लौटकर पास आ रही नींद को दो - चार अंगड़ाइयाँ लेकर उन्होंने फटकारा और साहिब कौर के पास चले गए।

“ये आज तड़के ही दरवाजा क्यों खोल रखा है? कोई प्रॉब्लम है? नींद नहीं आ रही है या फिर कोई टेंशन है?” उन्होंने धीरे - गंभीर पर बेचैन दिख रही पत्नी से पूछा।

“टेंशन ही है जी..... जब से ये नए पड़ोसी आए हैं ना मेरा तो जीना हराम हो गया है।”

“क्यों क्या हुआ? मुझे तो तुमने कभी कुछ बताया नहीं।”

“बताती क्या....? आपको तो इन बातों में कोई विश्वास ही नहीं। मेरी बातों को तो आपने मजाक में ही उड़ाना था....।”

“किन बातों को....?” सरमाया साहब की उत्सुकता पहेली का हल खोजने में मस्तिष्क का गोल - गोल चक्कर लगा आई है।

“पिछले दस दिनों से रोज हमारे दरवाजे के आगे चावल फेंक रहे हैं।” साहिब कौर ने पड़ोसन के घर की ओर इशारा करते हुए कहा।

“चावल फेंकते हैं....?”

“हां जी....”

“वो भला ऐसा क्यों करेंगे। हो सकता है कीड़े - मकोड़े या चींटियां चावल ले आती हों या फिर राशन लाते समय हमारे थैले में से ही गिर गए हों। दरअसल तुम औरतों की मानसिकता की आँख बहुत छोटी होती है। दूर तक दिखाई नहीं देता तुम्हें....।”

“सब दिखाई देता है जी मुझे....।” साहिब कौर तिलमिला गई।

“अच्छा, तुम्हें कैसे पता पिछले दस दिनों से फेंक रही है?”

“करमे की मां ने खुद देखा।”

“ओह! तो ये आग करमे की मां की लगाई हुई है।”

“मुझे पता था कि आपने मेरी हर बात में मीनमेख निकालनी ही है। इसीलिए आपसे नहीं कहा। वैसे भी मैंने सब देख लिया है। समझ लिया है कि चावल के दाने आए कहां से। एक - एक दाना चुगकर इन मुंहजले पड़ोसियों के आंगन में ही फेंका मैंने भी। खुद के घर में लड़कियां ही लड़कियां हैं तो हमारे बच्चों पर टोटके कर रही है। देखा नहीं तुमने, पांचवीं बार पेट लेकर घूम रही है लड़के की चाह में। शुरू - शुरू में तो बड़ा लाड़ दिखाती थी मेरे बच्चों से। अब समझी उसके काले मन में क्या खोट था। अबकि इसे रगे हाथ ना पकड़ा तो मेरा भी नाम नहीं। पता नहीं कौन - कौन से मंत्र फूंकती है चावलों में।” साहिब कौर का बुड़बुड़ाना और खीझना अनवरत जारी था।

सरमाया साहब ने आज अपनी पत्नी के चेहरे पर एक अजीब चीज देखी जो शायद सारी बुरी भावनाओं और कुविचारों के फलस्वरूप एक परछाई की तरह उसके चेहरे के साथ - साथ शरीर की पूरी भाषा से चिपक गई थी। सुबह - सवेरे पाठ करते समय सुकून की जो लाली साहिब कौर के चेहरे पर दिखती थी, वह आज गायब थी। फिर भी बड़े संयम से वे सब सुनते रहे।

थोड़ी देर बाद पड़ोसन ने दरवाजा खोला पर उन दोनों को दरवाजे पर जमा देखकर झट से अंदर चली गई।

“देखा, मैंने कहा था ना ये कलमुंही निकलेगी जरूर। ऐसे ही नहीं कहा था मैंने।” साहिब कौर फिर कलपी।

“अच्छा, अब गुस्सा थूक दे और भगवान का नाम ले...।” सरमाया साहब पत्नी को समझाते हुए चाय बनाने के लिए रसोई की तरफ चले गए। गैस सिम कर चाय के लिए पतीली बर्नर पर रख वे ब्रुश करने लगे। अब दोबारा सोने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था क्योंकि नींद को तो उन्होंने खुद घुड़क दिया था। अब वह भला उनके पास क्यों लौटती। तभी कमरे में अंधेरा हो गया और साथ ही दरवाजा उड़कने की आवाज भी कानों से आ टकराई। मन ही मन वे खुश हुए कि चलो अच्छा है किस्सा खत्म हुआ। उन्होंने जल्दी-जल्दी हाथ-मुंह धोया और बैठक में आ गए। देखा, पत्नी दरवाजे के ‘आई होल’ से आंख सटाए खड़ी थी।

“जल्दी आओ...देखो...!” सरमाया साहब के कदमों की आवाज सुनकर साहिब कौर ने बिना उनकी ओर देखे व्याकुलता से एक हाथ हिलाते हुए कहा।

‘आई होल’ पर अब सरमाया साहब की आंख थी।

“इसीलिए मैंने बत्ती और दरवाजा बंद कर दिया था कि वो चुड़ैल यह समझे कि हम सब सो गए हैं। देखना, अबके बाहर जरूर निकलेगी।”

सरमाया साहब उत्सुकता और बेचैनी से पत्नी की सच होती बातों को अपनी आंखों से देख रहे थे। उन्हें इस नाटक में अब आनंद आने लगा था। कुछ ही पल में बहुत आहिस्ता से, हल्की चरमराहट के साथ सामने का दरवाजा खुला और दबे पांव पड़ोसन की छाया बाहर निकली। उन्होंने सटकर खड़ी पत्नी का हाथ दबा दिया और फुसफुसाए – “आ रही है....।” साहिब कौर ने फटाफट सरमाया साहब को धकियाते हुए एक तरफ खिसकाया और ‘आई होल’ पर अपनी आंख चिपका दी। इसी दौरान चाय उबलने की आवाज सुनकर वे रसोई की तरफ भागे। चाय के कप ट्रे में रख वापिस आ ही रहे थे कि तभी बैठक और बाहर आंगन की बत्ती जलने के साथ ही दरवाजा भी भड़ाक से खुल गया।

उनके दरवाजे से जरा सी दूरी पर ही पड़ोसन खड़ी थी, मुट्ठी बांधे। अचानक दरवाजा खुलने से खिसिया गई – “आज बड़ी जल्दी उठ गई सोनू की मम्मी....?”

“हां, बहुत घबराहट हो रही थी। नींद नहीं आ रही थी....।”

“नींद तो मुझे भी नहीं आ रही। रात से ही दिल कच्चा-कच्चा हो रहा है।”

“मुझे पता है तुझे नींद क्यों नहीं आ रही?” साहिब कौर होठों ही होठों में बुदबुदाई।

“कुछ कहा सोनू की मम्मी?”

“हां, मैं कह रही थी कि इन दिनों में बेचैनी होती ही है।”

दोनों औरतें मन ही मन एक-दूसरे को कोसती हुई दिखावे के लिए फिर भी सहजता से बतिया रही थीं।

“तो लो बहन जी, एक कप चाय पी लो। चित्त ठीक हो जाएगा। होता है मन कभी-कभार बेचैन। भगवान सब अच्छा करेंगे....आप चिंता ना करें जी। अगर कहें तो नींबू की शिकंजी बना लाऊं?”

साहिब कौर ने सरमाया साहब को घूरा। पड़ोसन चाय और शिकंजी ना पीने की इच्छा जताती, आड़ी-तिरछी भाव-भगिमाएं बनाती, बंधी मुट्ठी से अपना नाइट गाउन संभाले हौले-हौले कदमों से अपने दरवाजे की ओर सरक गई।

“देखो, चावलों के दाने।” साहिब कौर ने कुछ दूर फर्श पर गिरे चावलों के कुछ दानों की तरफ इशारा किया जो पड़ोसन की मुट्ठी से ही गिरने की चुगली कर रहे थे।

“मोटी भैंस...देखा कैसे बाल खलारकर निकली थी। डायन कहीं की। मेरे बच्चों पर नजर रखती है। शक्ल तो देखो इसकी। सुबह उठकर मैंने पूरे फर्श पर पोंछा लगाया था तो अब क्या चावल कोई पिशाच आकर गिरा



गया।” साहिब कौर बुड़बुड़ाती जा रही थी और चाय सुड़कती जा रही थी।

“अब देखती हूँ कैसे करती है टोटका। करमे की मां बता रही थी कि पूरे 30 दिन का टोटका होता है चावलों का। और अगर एक दिन का भी गैप पड़ जाए तो पिछला सारा असर खत्म हो जाता है।”

“अच्छा, तो उसी गैप को खत्म करने का मोर्चा संभाला था आज।” सरमाया साहब हल्के मूड में बोले जरूर पर हैरान-पेशान वे स्वयं भी हो उठे थे। पत्नी की बातों में सच्चाई थी। सामने के घर में खिड़की के परदे पर आती-जाती परछाई पड़ोसन की व्यग्रता का जिक्र करती इस सच्चाई को और पुख्ता कर रही थी।

साहिब कौर ने भी आज दृढ़ निश्चय कर लिया था कि चाहे कुछ हो जाए घर का दरवाजा खुला ही रख छोड़ेगी। दरवाजा बंद होते ही पता नहीं कब पड़ोसन चुपके से आकर चावल फेंक जाए। आज इस कम में व्यवधान तो डालना ही डालना था।

सरमाया साहब टोने-टोटकों में जरा भी विश्वास भले ही ना रखते हों पर दूसरों द्वारा उनके परिवार के प्रति इस तरह की भावना रखना उन्हें भी खला था। उनके दो बेटे तो इतने छोटे और मासूम हैं कि अभी स्कूल भी नहीं जाते। लेकिन बड़े दोनों साहबजादों को साहिब कौर ने घर के पिछले दरवाजे से ही स्कूल भेजा। साथ ही सख्त हिदायत भी दे डाली कि स्कूल की छुट्टी होने पर पिछले दरवाजे से ही घर के अंदर दाखिल होना है ताकि पड़ोसन की बुरी नजर उन पर ना पड़े। झिंझोड़-झिंझोड़कर यह भी समझाया कि पड़ोस वाली मोटी भैंस से बचकर रहें। कुछ खाने को दे तो बिल्कुल ना लें। उनके बच्चों से भी बात ना करें। इसके अलावा और भी बहुत से निर्देश जारी किए। बच्चों ने जिस अरुचि से सुना उसी लापरवाही से हां में सिर हिला दिए।

बच्चों के स्कूल खाना होने के बाद धागे में पिरोई नींबू और हरी मिर्चों की माला घर की देहरी पर लटक गई। साथ ही ‘बुरी नजर वाले तेरा मुंह काला’ का प्रतीक काला करवा भी मकान की छत से नीचे दीवार पर टंग सबको जीभ चिढ़ाने लगा।

इस दौरान साहिब कौर ने चारों बच्चों की बनियानों, कमीजों, नेकरो आदि का बखूबी निरीक्षण किया कि कहीं से कोई कपड़े का टुकड़ा तो नहीं काट लिया गया। यह भी कि बच्चों का कोई वस्त्र गायब तो नहीं। इसी सारे झमेले में वह बच्चों का दूध-दलिया भी समय पर तैयार नहीं कर पाई। बच्चों के स्कूल से लौटने का वक्त हो चला था अतः वह कुछ वक्त पहले ही दरवाजे पर जम गई और ऑटोरिक्षा रूकने पर खुद उन्हें घर के अंदर लेकर आई। वहम और डर उसे खाए जा रहा था। सबसे पहले उसने बच्चों के पटके खोलकर उनके केश उलट-पलटकर देखे कि कहीं कैची से बालों का गुच्छा ही तो नहीं काट लिया गया। जहां-जहां वहम उभरा वहां-वहां उसकी नजर ने धावा बोल दिया और हाथों ने उस जगह की खूब मरम्मत की।

तीन दिनों में ही सरमाया साहब इस पूरे प्रकरण से खीझ से गए थे। साहिब कौर जब-तब बुड़बुड़ाती हुई पड़ोसन की तमाम हरकतों का ब्यौरा उन्हें न्यूज़ चैनल की तरह देती रहती। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या करें। वे सोचते कि पड़ोसियों को पड़ोसियों की तरह ही रहना चाहिए क्योंकि सुख-दुख में सबसे करीब वही होते हैं। पर जब तक चावल फेंकने का सिलसिला खत्म नहीं हो जाता तब तक उनकी पत्नी चैन से ना खुद बैठेगी ना उन्हें बैठने देगी।

शनिवार को साहिब कौर ने सुबह-सुबह ही झाड़ू पीट-पीटकर सारा घर-आंगन धोया। सभी कमरों में अगरबत्ती घुमाकर बाहर आंगन में तुलसी के पौधों के पास रख दी और हाथ जोड़कर चारों तरफ कुछ बुदबुदाती घूमती रही। कुछ देर बाद दूर से जब बाल्टी की खनक सुनाई दी तो जोर से चिल्लाई- “ओ मल्लखया.....जा पापा से एक रूपए का सिक्का लेकर आ, शनि महाराज आए हैं।” एक मिनट में ही मल्लखान ने सिक्का मां को थमा दिया।

“ठहर जा, जा कहां रहा है। चल जय कर।”

मल्लखान ने मां के साथ ही तेल में उचटती-सी नजर डाली और जोर लगाकर बोला- “जय शनि महाराज

की\*\*\*\*\*।”

शनि महाराज के जाते ही साहिब कौर ने बेटे को पुचकारा - “सच-सच बता किसकी सूरत दिखी तेल में।”

“मोटी भैंस की...।” कहकर मल्लवान जोर से हँसते हुए फटाफट घर के अंदर घुस गया। साहिब कौर की मुस्कुराहट झेंप गई।

तभी सरमाया साहब बाहर निकले।

“अब आप बिना कुछ खाए-पीए कहां जा रहे हो?” सरमाया साहब को पेन्ट-कमीज पहने देखा तो हैरान होकर पूछा साहिब कौर ने।

“कुछ नहीं बस एक तांत्रिक के पास जा रहा हूँ। सुबह-सुबह ही मिलता है वो।”

साहिब कौर सन्न रह गई। उसे यकीन ना आया। पर मन ही मन एक फुलझड़ी भी चल गई।

“तू चिंता ना कर, करता हूँ सालों का दिमाग ठीक।” कहकर वे जल्दी से बाहर निकल गए।

साहिब कौर का दिल बल्लियों उछलने लगा और पति के नाशते की चिंता भी कहीं उड़न छू हो गई। आखिर हैं तो बच्चों के पिता ही। फिक्र तो उन्हें भी है। मैं तो यूँ ही सोचती रही कि इन्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं। ये आदमी लोग सच ही कहते हैं कि औरत की दूर की नजर बड़ी छोटी होती है। अब पता चलेगा मोटी भैंस को जब अपने ऊपर बीतेगी। घर का कामकाज निपटाते हुए बहुत कुछ सोचा उसने।

पूरे तीन घंटे बाद पहुंचे सरमाया साहब, हाथ में काले रंग का एक पोलिथीन का लिफाफा थामे।

“बड़ी देर लगा दी जी....?” साहिब कौर ने पानी का गिलास थमाते हुए आवाज में मिठास घोल दी।

“हां, देर तो लगनी ही थी। काम पूरा करके जो आया हूँ, बहुत भीड़ थी।”

“लिफाफे में क्या है?” उसने मन की फुलझड़ी में प्रसन्नता की दियासलाई लगाते हुए उत्सुकता से पूछा।

“टोटका है...।”

“इसका क्या करेंगे जी?”

“हमने क्या करना है। अब तो जो करेंगे, तांत्रिक महाराज ही करेंगे। चलो अब खाना-वाना लगाओ शाम को मोहन बाबू के घर भी जाना है।”

“पड़ोसियों के घर भी जाना पड़ेगा...? ये कैसा टोटका दिया तांत्रिक ने?”

“तुम ज्यादा टेंशन मत लो। वो लोग छुपकर कर रहे थे, हम सरेआम करेंगे। और किसी को शक तक ना होगा।”

“कोई नुकसान तो नहीं होगा?”

“नुकसान की चिंता तू क्यों करती है। जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा।”

खाना खाकर सरमाया साहब सो गए। उनकी अलग ही बुद्धि है। जो एक बार ठान लेते हैं करके ही छोड़ते हैं। चाहे कुछ हो जाए। मन पर बोझ नहीं रखते। शाम को नींद से जागे तो सबसे पहले पड़ोसियों का दरवाजा खटखटाया - “और मोहन बाबू क्या हालचाल है?” उन्होंने हाथ मिलाते हुए पूछा।

“आज बड़े दिनों बाद आए सरमाया साहब...सब खैरियत से है?”

“सब कुशल-मंगल है जी।” लिफाफा मेज पर रखते हुए उन्होंने कहा और हैरान-परेशान खड़ी पड़ोसन को हाथ जोड़कर नमस्कार की।

“भाग्यवान, जाओ चाय बना लाओ...भाईसाहब आए हैं।”

“हां हां...अभी लाती हूँ।” अपने दिल की धड़कनों को समेटती पड़ोसन के पैर और भारी हो गए कि आज हो गया कांड। तभी सरमाया साहब ने गहरी आवाज में सुनाया - “हां भई क्यों नहीं, बहन जी ने तो हमारे घर का



चाय - पानी पीया नहीं पर हम जरूर पीकर जाएंगे।”

“पर ये लिफाफे में क्या उठा लाए?” मोहन बाबू के चेहरे पर उत्सुकता की लकीरें गहराने लगीं।

“दरअसल आज मैं गुरुद्वारे गया था तो वहां ऋषिकेश से आए हुए एक पंडित जी मिल गए। मोहन बाबू, बड़े गुणी और विद्वान पंडित हैं वे। काफी देर तक मैं उनसे ज्ञान-ध्यान की बातें करता रहा तो जाते समय उन्होंने ये लिफाफा मुझे दिया और कहने लगे कि.....।” कहते हुए एकबारगी सरमाया साहब का दिल धड़का जरूर पर पूरे अभिनय के साथ बड़ी सफाई से वे झूठ बोल ही गए।

तभी चाय आ गई। इस दौरान बहुत सारी और भी बातें हुईं। पड़ोसन दूसरे कमरे की दीवार से सट इन सब बातों के अर्थ निकालने के अंतर्द्वंद्व में फँसी रही।

“अच्छा, अब चलता हूँ मोहन बाबू। भूलना मत, इकट्ठे ही निकलेंगे कल सुबह।” सरमाया साहब ने उठते हुए बड़ी गर्मजोशी से हाथ मिलाया और खुश चेहरा लिए बाहर आ गए। बिना किसी शक के काम इतनी आसानी से हो जाएगा, उन्होंने सोचा नहीं था।

इस दौरान साहिब कौर घर में बैठी तड़पती रही कि पता नहीं क्या होने वाला है। औरतों की बातों को यूँ ही आदमियों तक पहुँचाया। सरमाया साहब जब घर लौटे तब भी उसने ज्यादा पूछताछ नहीं की। बस, जो वे बताते रहे वह चुपचाप सुनती रही।

आज रविवार है। यानि सबकी छुट्टी का दिन। तरह-तरह की आशंकाओं से घिरी, रातभर ठीक से सो ना पाने के बावजूद साहिब कौर सुबह सबसे पहले उठ गई। उसका मन बड़ा अशांत है। स्नान आदि से निपटकर सिर पर मलमल का दुपट्टा लपेट वह सुखमनी साहब का पाठ करने बैठ गई ताकि मन को कुछ सुकून मिले।

साधसंगि दुसमन सभि मीत॥

साधू कै संगि महा पुनीत॥

.....पर पाठ में उसका चित्त कैसे लगेगा। मन तो दूर आसमान में उड़ारी मार रहा है। सागर में गोते लगा रहा है। बस आँखें पढ़ रही हैं:

ब्रह्म गिआनी कै मित्र सनु समानि॥

ब्रह्म गिआनी कै नाही अभिमान।

इसी दौरान सरमाया साहब तांत्रिक का दिया लिफाफा थामे चुपचाप उसके सामने से निकल गए। उसका दिल सीने में एक बार जोर से धड़का। पर पाठ करने की वजह से उस समय वह उनसे कुछ कह ना पाई। मस्तिष्क सरमाया साहब के पीछे-पीछे दौड़ने लगा और आँखें गुटके पर दौड़ती जा रही हैं:

धनवंता होइ करि गरबावै॥

त्रिण समानि कछु संगि न जावै॥

अपने चारों बेटों के चेहरे उसकी आँखों की पुतलियों में नाचने लगे। अभी कुछ और पृष्ठ भी पढ़े ही थे कि गर्भवती पड़ोसन हाथ में चावलों की मुट्ठी बांधे आँखों के सामने आ खड़ी हुई। उसने मन ही मन अरदास की कि हे वाहिगुरु! रक्षा करना। हमारे हाथों किसी का बुरा ना हो। जुबान लगातार जपती जा रही है:

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई॥

तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई॥

तभी कुछ आवाजें उसके कानों से आ टकराई - “करता हूँ सालों का दिमाग ठीक जो जैसा.....।”

जिस पाठ को करने में उसे सिर्फ घंटा भर लगता था। आज उसे पूरा करने में पूरा डेढ़ घंटा लग गया। उसमें भी मन इधर-उधर ही भटकता रहा। ध्यान तो लगा ही नहीं। पाठ तो समाप्त हो गया लेकिन विचारों की धड़कनों को आराम नहीं मिला। हल्की-सी आहट होती तो उसे लगता जैसे सरमाया साहब आ गए हों।

उधर पार्क में बेंच पर बैठे थे दोनों पड़ोसी। साथ की बेंच पर बैठे एक वृद्ध दंपति कबूतरों को दाना डाल रहे



थे। साधारण-सी कुछ बातों की औपचारिकता के बाद मोहन बाबू ने बात का एक सिरा पकड़ा- “जिंदगी में संतुष्टि बहुत जरूरी है, सरमाया साहब। बेटियों और बेटों में अब कोई फर्क नहीं रहा। जमाना बहुत बदल गया है। अब इन्हीं को देख लो। दो लड़कियां हैं और दोनों डाक्टर। आपने भी देखा ही होगा कि कितना ख्याल रखती हैं मां-बाप का।” उनकी नजर वृद्ध दंपति की ओर उठ गई।

“सही कहते हो, मोहन बाबू। जितनी हमदर्दी बेटियाँ रखती हैं, बेटे नहीं। और फिर मरने के बाद किसने देखी है वंशबेल। सब ढकोसले हैं। मृगतृष्णा है। अंधविश्वास है। जो समय सुख से निकल जाए वही अच्छा। कल पंडित जी ने भी यही कहा था कि जीवन में शांति बहुत जरूरी है। यही बाजरा मुझे थमाते हुए उन्होंने कहा था कि इसे पक्षियों को डालने से बड़ा सुकून मिलता है। फिर मेरी क्या मजाल थी कि सारा सुकून मैं अकेला भोग लेता। इसलिए आधा आपके लिए ले आया।” उन्होंने पंसेरी की दुकान से खरीदा कुछ और बाजरा मुट्ठी में भरा और दूसरे हाथ से कबूतरों को थोड़ा-थोड़ा डालते हुए बात का दूसरा सिरा मजबूती से थामे रहे।

मोहन बाबू के मन में ढेर सारा अपनापन उमड़ आया।

“हम तो और बच्चा चाहते ही नहीं थे लेकिन इन औरतों को कौन समझाए। ऊपर से करमे की मां ने हमारी धर्मपत्नी के कान और भर दिए कि यदि किसी ऐसे घर के आगे महीना भर चावल डालो जहाँ लड़के ही लड़के हों तो शर्तिया बेटा ही पैदा होता है.....।” मोहन बाबू भी अपना मन हल्का करने लगे।

ओह! तो यहां भी आग करमे की मां की ही लगाई हुई है। सरमाया साहब मन ही मन मुस्कराए।

“कहीं आपके आंगन में भी तो नहीं फेंक आई चावल, हमारी मुन्नी की मां....?” मोहन बाबू को कुछ याद आया तो वे ठहाका मारकर हँसे।

“भई, हमें तो इस बारे में कुछ नहीं पता। हां, अगर ऐसी बात है भी तो हमारा घर-आंगन आपके लिए हमेशा खुला है। पर शर्त यह है कि इतने चावल जरूर फेंक देना कि एक वक्त की दावत हो जाए।” सरमाया साहब की उन्मुक्त हंसी मोहन बाबू के ठहाके में घुलमिल गई।

सरमाया साहब घर लौटे तो देखा कि अपने-अपने पति का बेचैनी से इंतजार करतीं दोनों पड़ोसनें आपस में बतिया रही हैं। उनके मन के अंदर बेशक एक अनजाना भय व्याप्त हो लेकिन चेहरों पर अपनेपन का नूर भी साफ झलक रहा था। उन्होंने शुक्रिया भरी एक दृष्टि आसमान की ओर डाली जिसके अनंत विस्तार में उड़ गए सारे कबूतर बाजरे के बदले में ढेर सारा अमन और चैन जमीन पर बिखेर गए थे।

**अंग्रेजी माध्यम भारतीयों की शिक्षा में सबसे बड़ा कठिन विघ्न है । सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है ।**

**-महामना मदनमोहन मालवीय**

**हिंदी वह धागा है जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी ।**

**-डा० जाकिर हुसैन**

**हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है , वह हमारी राष्ट्र भाषा है ।**

**-चक्रवर्ती राज गोपालाचारी**

**चाहे कुछ भी हो एक दिन हिन्दी देश की राजभाषा बन कर रहेगी । जो हिन्दी अपनायेगा वही आगे चलकर अखिल भारतीय सेवा में जा सकेगा और देश का नेतृत्व भी वही कर सकेगा ,जो हिन्दी जानता होगा । -नीलम संजीवा रेड्डी**

## कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप



संजीव कुमार

संविधान के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा है और उसके अनुपालन के लिए संविधान में कई व्यवस्थाएँ की गई हैं। इसी व्यवस्था के अंतर्गत अनुच्छेद 351 के अनुसार - “संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।”

सरकारी पत्र-व्यवहार और टिप्पणी लेखन की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा से थोड़ी भिन्न होती है, फिर भी इस भाषा को यथासंभव जनसामान्य की भाषा के समीप ही रखा जाना चाहिए। कार्यालयीन हिन्दी का संपूर्ण स्वरूप सरकारी कामकाज की कार्य प्रणाली और उसके पीछे निहित सिद्धांतों द्वारा निर्धारित होता है।

कार्यालयीन भाषा की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. **सरल एवं स्पष्ट भाषा** - प्रायः यह समझा जाता है कि हिंदी भाषा में टिप्पणी एवं प्रारूप लिखना कठिन है लेकिन कोई भी भाषा सरल या कठिन नहीं होती। भाषा की जानकारी न होना ही भाषा को कठिन बनाता है क्योंकि भाषा एक नदी की भाँति होती है। उसकी धारा में जो भी आता है वह उसी का हो जाता है अतः दैनिक कार्यों के माध्यम से जितनी अधिक हिन्दी भाषा और उसके शब्दों से परिचय होगा वह उतनी ही सहज व सरल लगेगी। कार्यालय में प्रयुक्त हिन्दी इतनी सरल होनी चाहिए कि दूसरे अधिकारी व कर्मचारी आसानी से समझ सकें। कार्यालयीन हिन्दी में द्वि-अर्थी और अटपटे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। यही वजह है कि कभी कभी प्रबुद्ध लोग जब फाइल पर अपने पांडित्य का प्रदर्शन करने लगते हैं तो भाषा विस्तार के साथ-साथ मामले की तह तक पहुँचने में और मामले पर शीघ्र कार्रवाई करने में काफी विलंब हो जाता है। उदाहरण के लिए ‘इसे मंजूरी दे सकते तो ठीक होगा’ के स्थान पर ‘इसे मंजूरी दी जा सकती है’ का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. **संक्षिप्तता** - सरकारी कामकाज की भाषा संक्षिप्त होनी चाहिए। संक्षिप्तता के साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि टिप्पणी व प्रारूप में वे तथ्य छूट न जाएँ जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। विचार स्पष्ट करने के लिए विस्तार अधिक हो सकता है परन्तु अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। जैसे - ‘आपका लंबा, विस्तार भरा पत्र मिला’ के स्थान पर ‘आपका दिनांक..... का पत्र सं. .... मिला’ का प्रयोग किया जाना चाहिए। अतः भाषा निश्चित एवं संक्षिप्त होनी चाहिए।
3. **अर्थ की स्पष्टता** - कार्यालयीन भाषा का मुख्य कार्य विचारों को बिना लाग-लपेट के संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना होता है। इस रूप में अच्छी भाषा उसी को माना जाएगा जिसका केवल वही अर्थ निकले जो लिखने वाला सप्रेषित करना चाहता है। द्वि-अर्थी या अनेकार्थी होना साहित्यिक भाषा का गुण माना जाता है। कामकाजी हिन्दी में यह एक अवगुण होता है।
4. **दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग** - प्रत्येक जीवन्त भाषा में यह क्षमता होती है कि वह

दूसरी भाषा के शब्दों को अपने में समाहित करते हुए अपनी भाषा में समृद्धि करे। इसी के अनुरूप मुगलों के शासनकाल में अरबी, फारसी के तथा अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजी भाषा के हजारों शब्द हिन्दी भाषा में समाहित हो गए। भारत सरकार की नीति है कि अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग में किसी भी प्रकार की हिचक नहीं होनी चाहिए। अंग्रेजी के अनेक शब्द जैसे रजिस्टर, टाईपिस्ट, टिकट, टोकन आदि का बहिष्कार किसी भी दृष्टि से हिन्दी में समृद्धि के लिए हितकर नहीं माना जा सकता।

5. **वाक्य विन्यास** – कामकाजी हिन्दी में आवश्यकतानुसार दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाया जा सकता है। लेकिन पद रचना तथा वाक्य रचना हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल ही होनी चाहिए। यद्यपि किसी भी जीवंत भाषा पर दूसरी भाषाओं का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है किंतु यह प्रभाव उस भाषा के मूल स्वरूप को विकृत न करे, यह ध्यान रखना आवश्यक है। इस दृष्टि से बैंक शब्द का बहुवचन बैंकों होना चाहिए न कि अंग्रेजी के बहुवचन रूप बैंक्स को ही यथावत लिया जाए। इसी क्रम में चेक का बहुवचन चेकों होगा न कि चैक्स।

वाक्य स्तर पर वाक्य-रचना हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल हो। उदाहरण के लिए 'पेड़ से गिरने वाला लड़का आज मर गया' वाक्य अंग्रेजी रूपांतर The boy, who fell from the tree, died today के प्रभाव के कारण 'वह लड़का, जो पेड़ से गिरा था मर गया' के रूप में प्रयोग किया जाता है जो हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। इस प्रकार दूसरी भाषा के प्रभाव से बचना चाहिए। हमें अंग्रेजी में सोचकर या लिखकर उसका अनुवाद करने की अपेक्षा मूल लेखन ही हिन्दी में करना चाहिए तभी भाषा की स्वाभाविकता बनी रह सकती है।

6. **शब्दों की मितव्ययिता** – कर्मचारियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपना कामकाज यथा शीघ्र निपटाकर कार्यालयीन प्रक्रिया को गति प्रदान करें। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कम से कम शब्दों में अपनी बात कही जाए। इसी प्रकार मितव्ययिता को ध्यान में रखते हुए चर्चा करें, निरस्त, स्वीकृत, अनुमोदित, जारी करें आदि का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार पत्राचार में भी आवश्यकता से अधिक शब्दों का प्रयोग न केवल श्रम को बल्कि भाषिक सौंदर्य को नष्ट भी करता है साथ ही अर्थ का अनर्थ होने की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए –

'भयंकर सूखा पड़ने से और वर्षा न होने से फसल खराब हो गई' के स्थान पर 'भयंकर सूखे से फसल खराब हो गई' का प्रयोग किया जाना चाहिए।

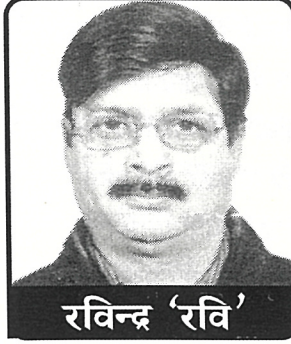
यह मूलभूत बातें हैं जो सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के सहज-सरल प्रयोग एवं उसके प्रस्तुतिकरण को प्रभावपूर्ण बना सकती हैं।

---0---

मैं हिन्दी का प्रेमी हूँ। साँस्कृतिक जीवन में हिन्दी के महत्व को भली भाँति समझता हूँ। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिन्दी बन चुकी है। इसलिए भारतीय राष्ट्र के विरोध में अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं।

—डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या





रविन्द्र 'रवि'

## हमारी बेटी

मेरी बेटी आज सुबह स्कूल गई  
इतनी छोटी थी लगा जैसे मेरी जान गई  
मैं जब उसके छोटे छोटे कदमों के साथ चला  
उसके छोड़ने के विचार से ही मेरा दिल हिला

और जब उसने कक्षा में बैठ मेरी तरफ देखा  
याद आया अपने मां बाप को छोड़ना मुझे, अकेला  
मुझे याद आया नन्ही सी बेटी का वो पहला कदम  
कितने प्रयास से उसने चलना सीखा था  
उसकी तोतली आवाज़ें जिन्हें सुना समझा देखा था।

वो छोटी सी लड़की कितनी तन्मयता से  
लिखना सीखती ऐसे लग रही थी,  
जैसे कि वो प्राथमिक नहीं बल्कि  
उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थी।

उक्त दृश्य से मेरी आँखों में  
अनायास ही आँसू भर आए,  
ये सोच पोछे एक दम कि  
कहीं नन्हीं का हौसला न टूट जाए

काश! मैं उसके साथ बैठ सकता  
और हाथ पकड़कर उसे लिखवाता,

जिन्हें समझने में वो नाकाम रहती  
पथ - प्रदर्शक बन सब कुछ समझाता  
उसे देख गर्व की भावना के साथ  
एक भय की छाया भी थी  
अति बीमार होते हुए थी, वो मानीटर थी  
ये सरासर ईश्वर की माया ही थी।

उसका पतला शरीर उसके ऊँचे प्रदर्शन  
की गवाही नहीं देता था  
गीता के अर्जुन की तरह मैं उससे  
अच्छा करने की प्रेरणा लेता था।

उसकी छोटी छोटी बातें, बड़ी बहन  
संग लड़ना चुलबुलाता था  
उसको मेरे पप्पी मांगने पे गुस्सा और  
मुझे उसे गुस्से पे प्यार आता था।

यही दुआ है मेरी ऊपर वाले से  
कि सलामत रहें सब की बेटियां  
अब आ गया है वक्त हम सब कहें  
दिल से कि हम पे बोझ कब थी बेटियां।  
हम पे बोझ कब थी बेटियां.....।

हिन्दी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है ।

— राजा राममोहन राय

## शेरों का वानप्रस्थ

करीब तीन वर्ष पूर्व जयगोपाल सेवा निवृत्त हो गया था। जब इकतीस वर्ष पूर्व उसने बारह सौ गज के प्लॉट में मकान बनवाया था तो दूर की सोच कर नक्शा तैयार करवाया था। कोठी इस तरह से बनवाई थी कि वे तीनों परिवार एक साथ भी रहे लेकिन हर कोई स्वतन्त्र भी हो। कोई दूसरे में हस्तक्षेप न करें।

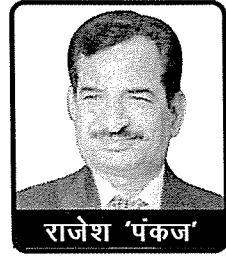
जयगोपाल ने भूतल पर अपने लिए और मेहमानों के लिए दो कमरे बनवाए। एक बड़ा रसोईघर, लाबी और बहुत बड़ा खुला ड्राईग्रूम सब के लिए सांझे थे। पहली मंजिल पर दोनों बेटों के लिए दो-दो कमरे और एक-एक रसोईघर बनवाए थे। पिछवाड़े में खुला आंगन रखा था। दिल चाहे तो नीचे सांझी रसोई चलाएं, यदि चाहें तो अपना अपना अलग चूल्हा जलाएं।

उसकी पत्नी कैंसर रोग से ग्रस्त हो गई थी और अठारह वर्ष पूर्व दुनियां से विदा हो गई थी। दोनों बेटे उससे बहुत जुड़ाव रखते थे। कभी अकेले नहीं छोड़ते थे। नौकरी के दौरान जब उसे दौरे पर जाना होता तो क्लेश हो जाता था। जब से पत्नी कैंसर-ग्रस्त हो गई थी, तो वह स्वयं ही बच्चों का पिता और खुद ही मां था और स्वयं ही घर का सारा प्रबन्ध चलाता रहा। पर जब से घर में काम करने वाला लड़का आ गया तो वह बच्चों की मां की तरह देखभाल करता था। फिर उसका भी विवाह हो गया, पत्नी आ गई, दो बच्चे हो गए। बड़ी बच्ची पांच वर्ष की और छोटा बेटा तीन वर्ष का। लेकिन वह घर से अलग नहीं हुआ और घर की एनेक्सी में पूरा परिवार रहता और घर की रसोई से ही भोजन पाता। दोनों बेटों ने भी उसे भाई जैसा और उसकी पत्नी को भाभी जैसा सम्मान दिया। और उसे 'रामजी' पुकारते थे। रामजी के दोनों बच्चे लड़कों को 'सन्नी भैया' और 'विधु भैया' पुकारते थे। फिर ज्यों-ज्यों जयगोपाल के अपने बच्चे जवान होने लगे, उसने धीरे-धीरे घर की जिम्मेदारी उन्हें देनी शुरू कर दी। पैसे का हिसाब और बाहर की जिम्मेदारी छोटे बेटे विधु को सौंपनी शुरू कर दी और घर का प्रबन्ध, खरीद-फरोख्त के दायित्व सन्नी को सौंप दिए थे।

सेवा निवृत्ति के बाद उसने सभी जिम्मेदारियां से मुक्ति पा ली थी और अपना समय सैर, गोल्फ, लिखने पढ़ने, और घूमने फिरने में व्यतीत करने लगा। क्या पकाना? क्या खिलाना? किसे बुलाना? किसके पास जाना दोनों बेटों की सिरदर्दी थी। उसे तो अपनी इच्छा बतानी होती और वह पूरी हो जाती। घर में उसका दबदबा और रौब कायम था।

समय बदलने के साथ घर में बदलाव की हवा चलने लगी। जिन बेटों ने सदा 'हां जी, डैडी जी' कहा था, वे अब 'प्लीज समझने की कोशिश किया करो डैड' कहने लगे थे। बहुओं बेटों ने न केवल सुझाव देने शुरू कर दिए थे, बल्कि एक तरह से निर्देश देने शुरू कर दिए थे। "आज शाम डैड जल्दी आ जाना, हमें किसी पार्टी पर जाना है" एक बेटा कह देता। अथवा दूसरा कह देता "डैड! आज प्लीज आप गोल्फ क्लब में ही खाना खा लेना और रात को दसक बजे के बाद ही घर आना। आज मेरे बास ने आना है, उन्हें एंटरटेन करना है।"

वह ऐसी हिदायतों को सुन कर हँस देता पर कभी अवहेलना भी नहीं करता था। जब रामजी की पत्नी बीच में टोक देती कि "इतनी सदी में डैडी जी कहा रहेंगे बाहर? आप अपने समय पर आ जाना डैडी जी। मैं आपको कमरे में खाना दे दूँगी" तो बहुएं उसे लताड़ लगा देती और उसे चुप करा देती। दो चार बार रामजी उसके पास आ कर रो भी दिया था। छोटी छोटी बात पर उसकी बहुत डाँट-डपट होने लगी थी। रामजी ने कई बार मन बनाया कि वह कहीं



राजेश 'पंकज'

मूल लेखक (पंजाबी) :

नृपेन्द्र सिंह रतन

हिन्दी रूपांतर : राजेश 'पंकज'



और चला जाए, कहीं अलग रहने की जगह ले ले। बच्चे बड़े हो रहे थे और दोनों बहुओं के ताने, रोक-टोक बढ़ती जा रही थी। लेकिन रामजी की अनपढ़ पत्नी हर बार उसके मंसूबों को धराशायी कर देती यह कह कर कि पिछले कई वर्ष का साथ क्यों छोड़ा जाए? डैडी जी को किसके भरोसे अकेले छोड़ा जाए, उसके बच्चे “दादाजी” के बारे में पूछेंगे तो वह क्या उत्तर देगी? कैसे समझाएगी?

घर के माहौल में गर्मी सी फैलने लगी थी। बिना कुछ कहे या किए या बोले घर में एक तनाव महसूस होने लगा था। वह ज्यादा से ज्यादा घर से दूर रहने लगा था लेकिन किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया। घर लौटने की कोई कशिश न रही थी, रामजी के बच्चों के स्नेह के अतिरिक्त। रामजी की बड़ी बेटी मनीशा राणों ने उसके लौटने पर बाहर का द्वार खोलने की जिम्मेदारी स्वयं ही पिछले वर्ष से अपने ऊपर ले ली थी। वह जब भी बाहर से लौटता तो द्वार पर आकर तीन बार कार का हार्न बजाता था। ? “टीं-टीं, टीं-टीं, टीं-टीं” की आवाज सुन कर मनीशा ‘दादाजी आ गए, दादाजी आ गए’ कहती और दौड़ पड़ती।

एक दिन दोपहर के समय ऐसे ही नंगे पांव दौड़ी। तेज गर्मी के कारण फर्श तप रहा था। “सी, सी” करती, पैर जल्दी जल्दी उठा कर उछलती रही लेकिन किसी और को दरवाजा नहीं खोलने दिया था।

जब वह कार को अन्दर ले आता तो मनीशा अपने छोटे छोटे हाथों से कार का दरवाजा चुपचाप खोलती, शीशा चढ़ाती और फिर दौड़ कर लाबी की तरफ वाला द्वार खोल कर खड़ी हो जाती। कुछ समय में मनीशा का छोटा भाई भी पीछे पीछे दौड़ कर आने लगा था। बोलता कुछ भी न था लेकिन शरारती आँखों से हँस कर, कुछ मुस्कुरा कर कार के भीतरी ताले का नाब दबा देता था और कार की चाबी ले कर ठुमक ठुमक चलते हुए बहन के पास चला जाता। वह दोनों बच्चों को एक-एक टाफी देता, उनसे हाथ मिलाता, चाबी लेता और ‘थैक्यू’ कह कर अन्दर आता था। मनीशा भी थैक्यू कहती फिर मां के पास भाग जाती। जिस दिन वह बच्चों को चाकलेट देता तो छोटा लड़का शोर करते हुए मां के पास चला जाता ‘मम्मी-मम्मी दा-दा जी चा-ले-त’ कहते हुए। इन बच्चों का यह स्नेह इंतजार ही उसके लिए घर लौटने का कारण बनते जा रहे थे। लेकिन जिस दिन सन्नी की पत्नी ने यह बात कही कि “डैडी जी बहुत दूरदर्शी हैं। दफ्तर से तो रिटायर हो गए पर घर में दो चपरासी तैयार कर लिए हैं”, तो उस दिन उसे बहुत दुःख हुआ। उसका मन हुआ कि चीख कर कहे ‘यू शट अप’ लेकिन गुस्से को अन्दर ही पी गया था।

उस रात को पहली बार उसे शेरों का सपना आया था। लगभग एक वर्ष पहले उसने डिस्कवरी चैनल पर शेरों के कबीले के बारे में तथा उनके सामाजिक व्यवहार के बारे में बहुत विस्तार वाला प्रोग्राम देखा था। जब वह हड़बड़ा कर नींद से जागा तो उसे याद आया कि उसी देखे गए प्रोग्राम के अंश ही उसके सपने में आये थे। क्लबों, गोष्ठियों, संगीत सम्मेलनों में वह अधिक से अधिक समय गुजारने लगा था। इन्हीं गोष्ठियों, संगीत सम्मेलनों के दौरान उसकी मुलाकात एक काफी भारी-भरकम, प्रभावशाली, सुन्दर नयन-नक्श वाली महिला से हुई जो धीरे-धीरे मित्रता तथा नजदीकियों में बदलने लगी। वह महिला आन्ध्र प्रदेश में नियुक्त एक सीनियर रह चुके सहकर्मी की पत्नी थी जो कुछ वर्ष पहले विधवा हो गई थी। उसकी इकलौती बेटी थी जो शादीशुदा थी और इसी शहर में रहती थी। लेकिन उसकी यह दोस्त महिला अपने घर में अकेली व स्वतन्त्र रहती थी। उम्र तो उसकी पचपन-सत्तावन के लगभग थी परन्तु अपने व्यक्तित्व, रस-रखाव तथा शरीर की अच्छी देखभाल के कारण चालीस बयालीस वालियों को भी मात देती थी।

पहले वह महिला कभी-कभी घर में आने लगी। ड्राईंग रूम में बैठ कर चाय-नाश्ता व गपशप होती थी। फिर आना-जाना लगभग रोज की बात हो गई फिर दोनों ड्राईंगरूम की बजाय जयगोपाल के बैडरूम में बैठने लगे।



घर में कानाफूसी शुरू हो गई। बहुएँ रामजी की पत्नी से कुरेद कुरेद कर पूछताछ करने लगी।

जिस दिन वे दोनों बैडरूम में बैठे और पहली बार दरवाजा बन्द हो कर दो-एक घण्टे तक नहीं खुला तो शाम को घर तूफान खड़ा हो गया। दोनों बेटे और बहुएँ गुट बना कर उससे बहस करने लगे। बहस तो क्या होती, उसकी बात तो किसी ने सुनी ही नहीं। बस कोसने, ताने और सुझाव देने वाली बातें वह चारों करने लगे। अन्ततः वह जब उनकी बकबक से तंग आ गया तो उसने जोर से मेज पर हाथ पटकते हुए चीख कर कहा, “शट अप नाऊ एंड लिसन टू मी”। उसकी दहाड़ से एकदम चुप्पी छा गई। चारों जैसे हैरान रह गए।

उसने कहा, “चुप रहो और ध्यान से मेरी बात सुनो। ठीक है तुम सब जवान हो गए हो, समझदार और अपने अपने काम में निपुण हो। पर एक बात याद रखो कि तुम में से किसी पर निर्भर नहीं हूँ और न कभी होऊँगा। यह मत भूलो कि यह हम लोग हैं जिन्होंने तुम लोगों को सब कुछ दिया है, तुम्हें अधिकार और आज़ादी दी है। तुम लोगों से कुछ लिया नहीं है और न लेने की जरूरत है। पर यह याद रखो कि यदि हमने तुम्हें हक और आज़ादी दिए हैं तो हमारे भी निजी हक और आज़ादी हैं। हमने तुम्हें यह सब कुछ दिया है पर इसका यह मतलब नहीं कि वी हैव लौस्ट ऐवरी थिंग, वी हैव नो राईट्स एंड लिबर्टीज। सो प्लीज, कभी भी न भूलना कि जो कुछ तुम्हें हमने दिया है, अलाओ किया है, वह सब हमारे लिए भी है। सीमा या शंटी या मंटी के पेरेंट्स की तरह मैं तुम लोगों को पावर नहीं दूँगा कि उन के समान तुम लोग भी मुझ पर हुक्म चलाने लग जाओ। उनके पेरेंट्स ने बच्चों के इस नियन्त्रण को मान लिया है पर मैं नहीं मानूँगा। देयर इज ए लिमिट एंड नैवर क्रास इट। यदि हम तुम्हें अधिकार और आज़ादी दे सकते हैं तो हम कभी भी वापिस भी ले सकते हैं”।

डैडी की यह दहाड़ सुन कर चारों सकते में आ गए। उन्होंने कभी सोचा भी न था कि डैडी जी ऐसा भी कर सकते थे, ऐसा भी कह सकते थे।

उस रात उसे फिर शेरों के सपने आए।

उस रात के पश्चात घर में तल्लवी, बेगानापन और टैंशन बहुत बढ़ गए थे। गत तीन चार महीने से एक और शमूफ़ा शुरू हो गया था। एक दिन दोनों बेटे और बहुएँ उसे घेर कर बैठ गये और यह सलाह देने लगे कि यह बड़ा मकान बेच दिया जाए। इतने बड़े घर का रख रखाव कठिन होता जा रहा था और घर भी पुराना हो रहा था। इसलिए इस घर को बेच कर होने वाली आय से कनाल-कनाल के दो मकान खरीद लिए जाएँ दोनों भाईयों के लिए। “और आप डैडी जी छः छः महीने हम दोनों के पास रहा करना”। प्रस्ताव सुन कर उसे धक्का लगा था और उसने सोचा, ‘अच्छा! अब मैं इतना नाकारा हो गया और वे इतने बड़े हो रहे हैं कि मेरा ठिकाना लूटने की साजिशें भी रचने लगे हैं’। इस पर उसने कुछ नहीं कहा और “अच्छा, सोचेंगे” कह कर बात टाल दी थी।

उस दिन के बाद उसे हफ्ता दस दिन बाद वही शेरों के सपने अपने शुरू हो गए। बेटे बहुएँ बच्चे न थे जो टल जाते। चौथे पाँचवे दिन वही बात छेड़ ही देते। बस इसी एक बात के इलावा अब उन चारों के पास कोई और बात करने का या पास बैठने के लिए एक मिनट भी न था। रसोइयाँ अलग हो गई थी और एक ही घर में तीन-तीन रसोइयाँ शुरू हो गई थीं। मात्र रामजी, उसकी पत्नी की सेवा व देखभाल और उनके बच्चों के प्यार के कारण समय कट रहा था।

पिछले कुछ दिनों से जय गोपाल को बुखार हो रहा था और इसकी कारण उसका कहीं आना-जाना बंद हो गया था। महिला मित्र रोज आती थी हाल चाल पूछने लेकिन रामजी और उसकी पत्नी के सिवाए और कोई उससे बात नहीं करता था। इसके साथ यह भी हुआ कि रामजी और उसकी पत्नी के साथ दोनों बेटों और उनकी पत्नियों की आने-बहाने कहा-सुनी होने लग गई। वे मिल कर रामजी के परिवार को ताने देने लगे थे। बातों-बातों में

उनके बच्चों की दुत्कारने लगे थे, ड्राईंग रूम या घर में खेलने - दौड़ने पर टोका - टाकी करने लगे थे।

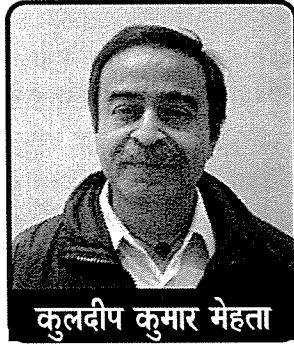
वह इन बदलते हालात के बारे में लेटे - लेटे सोच ही रहा था कि घर में जैसे भूकंप सा आ गया। चारों ओर से कोलाहल होने लगा, चीख पुकार शुरू हो गई। सन्नी और उसकी पत्नी ऊँचे स्वर में बोल रहे थे, रामजी और उसकी पत्नी की तीखी आवाज़ें भी आ रही थी। वह झटके से जोर लगा कर उठा। इससे पहले कि वह कुछ कहता सुनता, मनीशा चीखती हुई उसके कमरे की ओर दौड़ कर आई, “मैंने नहीं लिए। मैंने कुछ नहीं लिया दादा जी। दादा जी मैंने चोरी नहीं की। दादा जी मैंने कुछ नहीं किया”, बोलती हुई आ कर उससे लिपट गई। पीछे पीछे दोनों बेटे और बहुएँ भी कमरे में आ धमके। अभी उसे पूछा ही था कि “क्या हो गया.....”? लेकिन सन्नी ने घसीट कर मनीशा को खींच लिया और कड़कते स्वर में बोला, “आप बस चुप रहो डैडी। ये सब आप के फैलाए झंझट हैं। इतना सिर चढ़ा रखा है नौकरों के बच्चों को। आज पैसे उठाए हैं माँ की शह पर। कल को कुछ और काण्ड करेगी।” और इसके साथ ही उसने मनीशा को तीन चार चांटे जड़ दिए। उसकी माँ ने छुड़ाना चाहा तो सन्नी की पत्नी ने धक्का मार दिया। उसने फिर से बोलने की कोशिश की, “क्या, क्या हुआ”, लेकिन सन्नी ने बीच में ही टोक दिया, “कहा न कि सब आप के फैलाए झंझट हैं। बस अब और मत बोलो। चुपचाप लेट जाओ। मैं आज इनका टंटा ही खत्म कर दूँगा। अभी सब सामान उठा कर बाहर फेंक दूँगा। दफ़ा हो जाएं, जहाँ चाहे जा मरें अभी।” चीखता हुआ सन्नी मनीशा को घसीट कर बाहर ले गया।

रात हो गई थी। घर में पूरी खामोशी छा गई थी। दूर से रामजी के कमरे से सामान बाँधने रखने की आवाज़ें आ रही थी। या फिर मनीशा और छोटू की सिसकियों में से, “दादा जी, दादा जी, मम्मी दादा जी” की पुकार सुनाई दे रही थी। बुखार और कमजोरी से ग्रस्त न वह उठ सका न ही रामजी के परिवार को आवाज दे पाया। बिल्कुल बलहीन, हौसले से रहित, असहाय सा अनुभव किया और बौखलाया सा लेट गया।

लेटते ही शेरों का वह कार्यक्रम उसकी आँखों के सामने घूमने लगा। शेरों के झुंड तथा उनकी जीवनशैली पर आधारित था वह कार्यक्रम। एक झुंड में एक बब्बर शेर होता है और शेष शेरनियां और उनके शावक। जब तक बब्बर शेर बलवान होता है, झुंड में वह श्रेष्ठ होता है और बाकी सब उसके अधीन। यदि किसी जवान होते शावक से जरा भी खतरा लगे तो उसे बब्बर शेर मार डालता है या भगा देता है पर किसी अन्य को भी शेरनियों से सहवास नहीं करने देता। फिर एक समय आता है जब कोई शावक जवान हो जाता है और शेर बूढ़ा होने लगता है। वह नवयुवक बूढ़े बाप को तरह तरह से ललकारने लगता है। कभी उसके शिकार को मुंह मारता है जिसे शेरनियां बब्बर शेर के लिए लाई होती हैं, कभी उसके छोटे शिशुओं को डराता है, दाँत मारता है और कभी शेरनियों को घेरने का प्रयास करता है। बब्बर शेर अपनी शेरनियों, शावकों, शिकार को नए जवान होते शावक से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करता हुआ मुकाबला करता है। अन्ततः वह दिन भी आ जाता है जब नवयुवक शेर बूढ़े शेर की जीवन की सबसे बड़ी चुनौती देता है और वह बूढ़े शेर के शिशु शावकों को उसके सामने मार डालता है। जब बूढ़ा शेर कुछ नहीं कर पाता तो उसे भी एहसास हो जाता है। तब बूढ़ा शेर उठता है। एक बार अपने सारे शरीर को झटकता है, दुम उठा कर हवा में लहराता है, पूरे झुंड की ओर मुंह घुमा कर पूरी ताकत के साथ गरजता है, दहाड़ता है। फिर वह सब की ओर पीठ घुमा कर धीरे - धीरे शाही चाल की मस्ती से चलता, सब को पीछे छोड़कर, नवयुवक शेर को सब कुछ समर्पित करके अकेला ही जंगल की ओर चला जाता है।

जयगोपाल का भी मन हुआ कि वह भी बब्बर शेर के समान उठे, वह भी एक सिंह गर्जना करे और सबकी ओर पीठ घुमा कर चला जाए। लेकिन बुखार और कमजोरी का मारा वह कुछ भी न कर पाया। केवल दोनों नेत्रों से अश्रु बह निकले और उसने रजाई में मुंह छिपा लिया।





कुलदीप कुमार मेहता

## जय घोष

हर खास - ओ - आम को ये समझना होगा  
जिस मातृभूमि पर हमने जन्म लिया  
जिस माटी में हमारा बचपन बीता  
जिन फिजाओं में हमने सांस लिया और जवान हुए  
जिस धरती में पैदा अन्न खा हम जिन्दा रहे  
उसका सम्मान कराना होगा  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा,

बात ठीक है ये धरती पर बसी है कायनात  
पर देश भूमि का मात्र एक टुकड़ा तो नहीं  
जब तक इससे कोई रिश्ता न हो  
ये देश कभी अपना भी नहीं  
इस देश को अपनी रूह से अपनाना होगा  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा।

आज़ादी जरूरी है और ये.....  
इस देश के हर नागरिक का है हक.....  
और मिले हैं बहुत से हमें कानून से भी हक  
हक चाहिए तो कर्तव्य भी निभाने होंगे  
इस देश को तोड़ने के ख्वाब नहीं  
नई ऊँचाईयों पर पहुँचाने के सपने सजाने होंगे  
मिला है जो इस देश से उसका कर्ज भी चुकाना होगा  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा

देश से बढ़ कर कुछ भी नहीं  
विचार ऐसा मन में आना चाहिए  
देश से हैं हम, हम से देश नहीं

जिस जय घोष से आगे बढ़ती है हमारी सेना  
सुरक्षा करते हैं हमारे देश की हमारे फौजी  
उस जय घोष को  
आवाज़े बुलंद दोहराना होगा।  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा।

इस देश की आज़ादी का जनून था कभी  
प्रयास में थे मिल जुल कर हम सभी  
न ही कोई धर्म न जात आड़े आई  
यही नीति इस देश ने आज़ादी के बाद भी अपनाई  
इस देश के सविधान को दिल से अपनाना होगा  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा।

ये भी सच है हर बात नहीं लाई जा सकती।  
सविधान में अधिकार है तो साथ में कर्तव्य भी तो हैं  
शिकवे हैं देश के नेताओं से.....  
तो हम देश भक्त भी तो हैं  
स्वीकार नहीं करेंगे जो देश से गलत करेगा  
ऐसे लोगों को इस बात का अहसास कराना होगा  
इस माँ भारती का जय घोष लगाना होगा

भिन्न भिन्न धर्म और भाषाएं हैं मेरे देश की  
खास बनाती है इसे इसकी यही खूबसूरती  
कहलाता भिन्न भिन्न रंगों का ये गुलदस्ता भी कभी  
इस गुलदस्ते की डोर को 'मेहता' टूटने से बचना होगा  
एकता के सूत्र इस मन्त्र माँ भारती का जय घोष लगाना होगा.....  
जय घोष लगाना होगा।



## मेरी सहेली

मेरी एक सहेली है निशा। मैं उसे कई बार कहती हूँ, “निशा! तेरा नाम तो नशा होना चाहिए था। तुझे तो हर समय बातों का नशा चढ़ा रहता है।” सच-मुच वह इतनी बातूनी है कि जिस से बातें करने लगे वह कानों को हाथ लगाए कि हे भगवान यह बला कब टलेगी। वह सिर्फ मेरी ही नहीं पूरे कॉलिज की सहेली है। उससे हर कोई बच कर निकल जाना चाहता है परन्तु ना..... ना..... उससे भला कोई बच कर निकल सकता है। बस किसी को भी पकड़ लिया और उससे बातें करनी आरम्भ कर दीं और फिर उस की बात समाप्त हो जाए ऐसा कभी हो नहीं सकता। व्यक्ति स्वयं ही उससे पीछा छुड़ा ले तो छुड़ा ले परन्तु फिर भी उस में एक ऐसा आकर्षण है कि जिस दिन वह कॉलिज न आए तो पूरा दिन हर ओर उदासी सी छाई रहती है। हर कोई एक दूसरे से पूछता है कि क्या बात आज निशा कॉलिज नहीं आई। असल में खाली समय में वह बड़े काम की नज़र आती है। उसके साथ समय कैसे कट गया पता ही नहीं चलता जब किसी से बातें करने लगती है तो दूसरों की बुराईयां गिनना उस का सबसे बड़ा शुगल है। इसी लिए शायद दूसरा चसके ले ले कर उस की बातों से बड़ा आनन्द उठाता है।



एक दिन मैं इंगलिश का पीरियड अटेंड करने जा रही थी कि सामने पड़ गई। बस फिर क्या था मेरी बांह पकड़ कर मुझे रोक लिया। “कहां जा रही हो सुक्षिति जी..... ज़रा रूको तुम्हें एक मजेदार बात बताती हूँ।” “निशा छोड़, मुझे से पूछ रही है कि मैं कहा जा रही हूँ। क्या तू नहीं जानती इस समय इंगलिश का पीरियड है, मिस हो जाए तो फिर नोट्स कहां से मांगते फिरेंगे।” “अरी छोड़ यार..... इतनी बोर लैक्चरार कहीं देखी है तूने? लैक्चर देती है तो रेल गाड़ी की तरह भागती है। मेरे विचार में घर में रट्टा लगा कर आती है। कुछ समझ तो आती नहीं उसके लैक्चर की। बिना स्टाप बोलती चली जाती है।” “तेरी तरह।” मैंने उस की बात को काटते हुए कहा। वह अपनी बात को जारी रखते हुए कहने लगी, “कोई धीरे से आराम से बोले और अच्छी प्रकार समझाए तो कुछ समझ भी आए। मेरे पल्ले तो कुछ पड़ता नहीं। तुझे बड़ा शौक है उस का पीरियड अटेंड करने का। मेरी बात ध्यान से सुन। हैल्य बुक्स हमारे पास है। वहाँ से आराम से घर बैठे रट्टे-रूट्टे लगा लो और अच्छे से अच्छे मार्क्स प्राप्त करो। वह जो क्षमा है ना उसने पिछले वर्ष इंगलिश में एट्टी परसेंट मार्क्स लिए थे। सब रट्टे लगा कर।”

मैं दिल में सोच रही थी कि यह निशा की बच्ची मुझे कब क्षमा करेगी कि मैं पीरियड अटेंड कर सकूँ। मैंने हार कर उससे कहा, “अच्छा भई अब तो जाने दो..... मैं लेट हो रही हूँ। तूने मेरे साथ क्लास में नहीं चलना तो न चल..... मुझे तो जाने दे।” परन्तु वह कहां टलने वाली थी। वही सदियों पुरानी बात दोहराने लगी, “रट्टाफिकेशन इज़ दी बेस्ट प्रेपरेशन।” “छोड़ यार ..... यह घटिया इडियम बहुत पुराना हो चुका। कोई नई बात करो तो बात बने।” “चल छोड़, अब तो वह क्लास रूम में घुसने भी नहीं देगी। जा कर ज़रूर इंसल्ट करवानी है। चल कैटीन में चल कर बैठते हैं।” मर गए पहले पढ़ाई खराब हुई अब जेब भी ढीली करनी पड़ेगी। यह तो पहले ही दूंदती रहती है कि कोई इसकी बातें सुनने वाला और चाय पिलाने वाला मिल जाए ..... बस। मरता क्या न करता..... चल पड़ी उसके साथ कैटीन की ओर। जा कर बैठे ही थे कि निशा ने सर्विस बॉय को बुला कर कहा, “दो कप गर्म-गर्म चाय, दो समोसे और दो प्लेट गुलाब जामुन।” “नहीं निशा, मैं इतना कुछ नहीं खा सकती। मैं केवल एक समोसा ले लूंगी। मीठा मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं।” “यार तुम न खाना तेरी प्लेट भी मैं खा लूंगी।” वह सर्विस बॉय को झिड़क कर बोली, “कालू हमारा मुँह क्या तक रहा है जल्दी से खाने का सामान ले आ।” कालू मुस्कुराता हुआ चला गया और थोड़ी देर पश्चात खाने का सामान ट्रे में सजा कर ले आया। वही हुआ जो उसने कहा था। समोसा खाने के पश्चात गुलाबजामुन की दोनो प्लेटें चट कर गई। कर्टसी सेक मुझसे पूछा भी नहीं कि सुक्षिति तुम खाओगी या मैं खा लूँ। “निशा मीठा खा-खा कर तुम मोटी हो जाओगी। सहेली होने के नाते खाने से पहले मुझ से एक बार पूछ तो

लेती परन्तु तू तो ठहरी मतलबी।” “क्या तुझे गुलाबजामुन न खाने का अब दुःख लग रहा है? भई अपना तो खाने से मतलब। जब खाना ही है तो फिर पूछना क्या? तुमने तो पहले ही मीठा खाने से मना किया था..... फिर पूछने से लाभ।” “चल बातें न बना..... जल्दी - जल्दी खा और चल।”

जब प्लेटें अच्छी प्रकार के सफाचट हो गई तो कहने लगी, “सुक्षिति मेरी बात ध्यान से सुन..... वह जो क्षमा है ना बड़ी खराब है। इतने अच्छे मार्कस उसके पता नहीं किस प्रकार आ जाते हैं। उस का ध्यान पढ़ने में तो है ही नहीं। मैंने कई बार उसे सीनियर्स के साथ घूमते देखा है। वह अच्छी लड़की नहीं है। उसके पास मत बैठा - उठा कर। मुझे तो वह एक आँख नहीं भाती। किसी दिन देखना अवश्य गुल खिलाएगी। मेरी बात याद रखना, हां.....।” “निशा! क्यों हर एक की बुराई दूसरों के पास करती रहती है। किसी के बारे ऐसी फ़िज़ूल बातें अच्छी नहीं लगती। शायद इसीलिए कॉलिज में तू सभी की सहेली है क्योंकि हर कोई दूसरे की बुराई सुन कर खुश होता है और वह मसाला उन्हें तुझसे मिल जाता है। मैंने देखा कि कई लड़कियां तो जान बूझ कर तेरी थोड़ी सी तारीफ़ क्या कर देती हैं कि तू बस शुरू होती है दूसरों में कीड़े निकालने के लिए और वह चटखारे ले - ले कर तेरी बातें सुनती हैं और तू अपने आप को पता नहीं क्या समझने लगती है। जिस क्षमा की तू बात करती है ना..... वह सीनियर्स से अपने लिए पुराने नोट्स मांगती है। वह तो पढ़ाई में इतनी मगन रहती है कि सिवाए स्टडी की बातों के उसे कोई बात सूझती ही नहीं। इसीलिए उसके इतने अच्छे मार्कस आते हैं। वह तो इतनी अच्छी है कि न तो कभी उसने कोई क्लास मिस की और न ही वह तेरे जैसे अलूल - जलूल बातें करती है। सभी सीनियर्स उसकी इज्ज़त करते हैं। यहां तक कि स्टाफ़ भी उसे पलकों पर बिठाता है। ऐसे किसी को फ़िज़ूल में बदनाम नहीं करते। वह तो हर एक से बड़े प्यार से इज्ज़त से बात करती है। तू पता नहीं कहां - कहां से बे - पर की उड़ाती रहती है।” बस मेरा इतना कहना था कि मुँह फुला कर गुस्से से उठी और तेज़ी से कैटीन के बिल की पेमेंट की और अगला पीरियड अटैंड करने चली गई।

कॉलिज में छुट्टी हुई तो मैं स्टैंड से अपना स्कूटर लेने जा रही थी कि पीछे से जोर - जोर से आवाज़ आने लगी। “सुक्षिति ..... अरी तो सुक्षिति ..... रुक..... जरा रुक।” मैंने पीछे मुड़ कर देखा कि निशा तेज़ - तेज़ कदमों में मेरी ओर बढ़ती आ रही थी। “हां बोलो क्या बात है।” मैंने कुछ रूखे पन से उसे सम्बोधित करते हुए पूछा और साथ ही मैं हल्के से मुस्कुरा दी। “अरी क्या कहूँ..... बड़ी देर से मैं गेट पर खड़ी गाड़ी की प्रतिक्षा कर रही थी। आज हमारा ड्राईवर गाड़ी ले कर नहीं आया। बस रास्ते में कोई सड़क छाप भिन्न मिल गया होगा..... वहीं खड़ा हो कर उससे बातों में लग गया..... तो लग गया..... फिर तो भूल ही जाता है कि वह किस काम जा रहा था। आज डैडी से कह कर उसकी ऐसी खातिर करवाऊँगी कि याद रखेगा। आज मेरा पिक्चर देखने का प्रोग्राम था। वह भी गया भाड़ में। मुफ्त की खा - खाकर मोटा हो गया है। गाड़ी चलाते उसे नींद आने लगती है। जब भी मैं गाड़ी में बैठती हूँ तो डरती हूँ कि कहीं कोई ऐक्सिडेंट हो गया तो उसका क्या जाएगा..... नुकसान तो हमारा ही होगा ना। डैडी उसे कुछ कहते ही नहीं। जब उन से उसकी कोई शिकायत करो तो कहते हैं, “जो भी हो भला, शरीफ और ईमानदार व्यक्ति है। मेरी बेटा कॉलिज जाती है तो मुझे कोई चिन्ता नहीं रहती” अब डैडी से कोई पूछे कि मैं कोई दूध पीती बच्ची हूँ जो वह मुझे अकेले कॉलिज भेजने से डरते हैं। बस डैडी की यही आदत मुझे बुरी लगती है। अब तू भी तो अकेली आती जाती है ना। देखा जाए तो मेरी मम्मी बड़ी सख्त स्वभाव की है। मज़ाल है उनके आगे कोई बोल भी पाए। वह तो किसी की सुनती ही नहीं। उनसे तो कोई बात शेयर करते हुए भी डर लगता है। सुक्षिति मेरी तो छोड़ वह तो डैडी को भी पड़ जाती हैं। डैडी भी उनसे बहुत डरते हैं।” “अच्छा मेरी अम्मा यह बता कि क्या यही बातें सुनाने के लिए तूने मुझे रोका था? डैडी बुरे, मम्मी बुरे, ड्राईवर सहेलियाँ लैक्चरार बुरे यहाँ तक कि सीनियर्स भी बुरे जो सदा स्टडी में हमारी हैल्प करते हैं। क्या तुम्हें सब बुरे ही नज़र आते हैं। एक तू ही संसार में दूध की धुली रह गई।” “सुक्षिति! गुस्सा क्यों करती है..... मैं तो.....।” मैंने उसकी बात बीच में ही काटते हुए कहा, “चल छोड़ सब बातें, तू मुझे बता कि घर जाते मुझे रोका क्यों था।” “ओहो.... बातों - बातों में मैं तो भूल ही गई। हां, वह हमारा ड्राईवर गाड़ी लेकर नहीं आया परन्तु मैंने तो घर जाना ही है ना। हमारा घर रास्ते में ही पड़ता है। तू अपने घर जाते मुझे रास्ते में मेरे घर ड्राप करती हुई चली

जाना।” मैंने अपने माथे पर हाथ मारते हुए उसे कहा, “बस इतनी सी बात के लिए मेरा इतना टाईम वेस्ट किया। इतनी देर में हम घर पहुँचे होते।” हम दोनों स्टैंड पर पहुँचीं और स्कूटर स्टार्ट करके उसे बैठने के लिए कहा। उसके स्कूटर पर बैठते ही हम चल पड़े। दो मिनट के पश्चात् ही पीछे से आवाज़ आई, “सुक्षिति! एक बात सुन.....।” मैं उसकी बात काटते हुए पीछे मुड़े बिना ही बोली, “निशा! बस..... ऐक्सिडेंट हो जाएगा।” परन्तु वह कहाँ चुप रहने वाली थी। थोड़ी देर पश्चात् ही फिर कोई राम कहानी ले कर बैठ गई। मैं बिना कुछ सुने अपने ध्यान से ड्राइव करती रही। जब उसे उस के घर उतारा तो मैंने भगवान का धन्यवाद किया और उसकी बाय-बाय सुने बिना ही स्कूटर निकाल कर ले गई। घर पहुँच कर मैंने सुख की साँस ली।

एक दिन कुछ लड़कियों ने सलाह की कि टेटोरियल ग्रुप की इंचार्ज मैडम के आगे किसी दिन पिकनिक मनाने की प्रोपोज़ल क्यों न रखी जाए। निशा और क्षमा कहने लगी, “सुक्षिति तुम ही मैडम से बात करना..... तेरी बात तो वह मानती भी है।” “घबराओ नहीं, बात तो मैं ही करूँगी परन्तु तुम दोनों मेरे साथ चलना।” सब लड़कियों के हाँ कहने पर मैंने कहा, “ तो फिर देरी किस बात की। किसी दिन क्यों, अभी क्यों नहीं।” हम तीनों लड़कियाँ उसी समय मैडम के पास स्टाफ रूम में पहुँच गई और जा कर उन्हें बताया कि हम टेटोरियल ग्रुप की बीस लड़कियाँ आने वाले शनिवार को पिकनिक मनाना चाहती हैं। वह कहने लगी, “मैं प्रिंसिपल से अनुमति ले कर आप को कल बताऊँगी।” अगले दिन प्रिंसिपल की अनुमति मिलने पर हम सब लड़कियाँ पिकनिक के इन्तज़ाम में जुट गईं। दो दिन के पश्चात् शनिवार को हम सब लड़कियाँ प्रोग्राम अनुसार अपने-अपने टिफिन लेकर आठ बजे सवेरे कॉलिज पहुँच गई और ‘हायर’ की गई प्राइवेट बस जो पहले से ही हमारे इन्तज़ार में खड़ी थी, में बैठ गईं। खाने पीने का बाकी सामान फ्रूट आदि की टोकरियाँ कॉलिज की दो सेवादारों ने मैडम की देख-रेख में बस में रख दीं और हम बीस लड़कियाँ मैडम और दो सेवादारों के साथ पिकनिक मनाने चल पड़ीं। सब एक दूसरे के साथ बातों में व्यस्त थे। निशा ऊँची आवाज़ से बोली, “सब लड़कियाँ चुप हो जाओ। अब हमारे कॉलिज की लता बेबी क्षमा हम सब को एक गाना सुनाएगी।” सब ने ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाई और फिर जो क्षमा ने वो समाँ बाँधा कि सब मस्त हो कर झूमने लगे। गाने की समाप्ति पर खूब तालियाँ बजीं। इसी प्रकार गाने गाते, चुटकले सुनाते और हँसते-खेलते शहर से बीस कि.मी. की दूरी पर बहते दरिया के किनारे एक अकेली जगह पर जहाँ कोई आवाज़ नहीं थी हमने डेरा जमा लिया। हम कुछ लड़कियाँ दरिया के किनारे बैठ कर प्रकृति का नज़ारा करने लगीं, कुछ पाँव पानी में लटका कर पानी की लहरों से खेलने लगीं और कुछ इधर-उधर घूमने लगीं। लगभग एक घंटे की आज़ादी के पश्चात् सेवादार लड़कियों को आवाज़ें दे कर बुलाने लगीं और हम सब इक्की हो कर एक सर्कल बना कर बैठ गईं। सबने अपने-अपने टिफिन ले कर खाना खाना आरम्भ कर दिया। उसके पश्चात् फ्रूट आदि खाने लगे। इसी प्रकार हँसते खेलते, घूमते-घुमाते और गाने आदि गाते दिन व्यतीत हो गया। अब सब ने वापसी का प्रोग्राम बनाया। एक लड़की नेकता किनारे पर अकेली पाँव पानी में लटकाए मस्त बैठी थी कि वापिस जाने के लिए सेवादार की आवाज़ सुन कर हड़बड़ा गई और दरिया में गिरते ही पानी की तेज़ धारें उसे बहा ले जाने लगीं। वह बड़े ज़ोर से चिल्ला रही थी, “बचाओ-बचाओ” हम सब उधर भागे। परन्तु उसे बचाए तो कौन। हम में से किसी को भी तैरना नहीं आता था हम सब भी बचाओ-बचाओ का शोर मचाने लगीं कि निशा ने आव देखा न ताव, लड़कियों को पीछे धकेलते हुए दरिया में छलाँग लगा दी। नेकता पानी में डूबती और फिर उभरती। निशा ने बड़ी तेज़ी से तैरते हुई उसे जा लिया और बालों से पकड़ कर उसे ऊपर उठा लिया और तैरती हुई उस किनारे तक ले आई। मैडम, दोनों सेवादारों, क्षमा और मैंने मिल कर उन्हें बाहों से पकड़ा और पानी से बाहर खींच लिया। नेकता बेहोश हो चुकी थी। उसे धरती पर उल्टा लिटा कर उसके पेट से पानी आदि निकाला गया। कुछ देर के पश्चात् उसे होश आई तो सब की जान में जान आई। हम सब बस में बैठे और वापसी के लिए चल दिए। मैडम कह रहे थे, “निशा, आज तो तूने कमाल कर दिया। आज तुम्हारे कारण भगवान ने नेकता को नया जीवन दिया है।” “मैडम जी इसमें कमाल की क्या बात है। मैंने छलाँग लगाई और मछली की तरह पानी पर फिसलती हुई नेकता को जा पकड़ा। यदि यह दरिया की तह में भी पहुँच जाती



तो मैं इसे वहाँ से भी निकाल लाती। बात यह है कि जब मैं बहुत छोटी थी तो डैडी मुझे अपने साथ दरिया पर नहलाने ले जाते और मुझे तैरना सिखाते। मेरा तैरने में शौक देख कर उन्होंने अपनी पुश्तैनी कोठी में मेरे लिए स्विमिंग - पूल भी बना दिया। मैडम जी मैं बताऊँ.....।” मैडम ने दिल से सोचा कि अब तो इसकी बात कभी समाप्त नहीं होगी, उसकी बात को बीच में ही काटते हुए कहा, “निशा मैं सोचती हूँ कि यदि भारत की हर लड़की तुम्हारी तरह बहादुर बन जाए तो भारत की ओर कोई दुश्मन आँख उठा कर भी न देख सके।” मैडम के इतना कहते ही सब निशा की खूब तारीफ करने लगे और नेकता उस का धन्यवाद करते नहीं थक रही थी। इसी प्रकार की बातें करते हम शाम को कॉलिज पहुँचे। दुर्घटना के बारे सोचते तो सबके रोंगटे खड़े हो जाते। जहाँ दुर्घटना के टल जाने की खुशी थी वहीं घटना घटने से सब के मन भी भारी थे। कॉलिज पहुँचने के पश्चात सब अपने-अपने घरों को चल दिए। निशा और कई दूसरी लड़कियों के मम्मी डैडी अपनी-अपनी गाड़ियों में उन्हें लेने आए हुए थे। जब उन्हें घटना का पता चला तो वह भी निशा की तारीफ किए बगैर न रह सके और सब उसे प्यार भरी नज़रों से देखने लगे। अगले दिन जब मैं कॉलिज पहुँची तो यह खबर जंगल की आग की तरह पूरे कॉलिज में फैल चुकी थी। प्रिंसिपल ने निशा को अपने ऑफिस में बुलाया और अपनी सीट से उठ कर उसका स्वागत किया। सब ओर निशा की बहादुरी के चर्चे हो रहे थे।

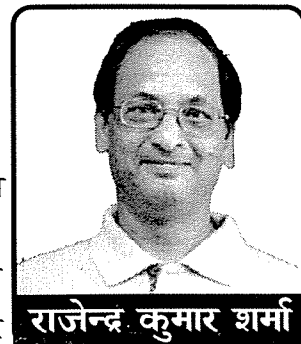
उस दिन के पश्चात निशा कुछ चुप-चुप सी रहने लगी थी। बातें करते हुए उसमें पहला सा चुलबुलापन नहीं था। न जाने क्यों। परीक्षाएँ भी सिर पर आ गई थीं, शायद इस लिए। “निशा क्या बात? हादसे वाले दिन के पश्चात तुम चुप-चुप सी रहने लगी हो। न वह उछल कूद और न ही वह बात से बात निकालने की उतनी अधिक आदत।” “सुक्षिति, कोई बात नहीं..... वैसे ही कभी कभी अकेली बैठी सोचने लगती हूँ कि यदि मैं नेकता को ना बचा पाती तो आज हम अपनी प्यारी सी सहेली से वंचित हो जाती।” “चल छोड़ निशा ऐसी बातें मन में नहीं लाते। परीक्षाएँ निकट आ गई हैं पढ़ाई में अच्छी प्रकार से दिल लगा।”

परीक्षाएँ आई और समाप्त हो गई। जब रिजल्ट आया तो निशा के मार्क्स की परसैंटेज कॉलिज में सब से अधिक थी। पूरा कॉलिज दान्तों तले ऊँगलियाँ दबाए हुए था। बहादुरी तो ठीक थी परन्तु इतनी इंटेलिजेंस यह कैसे हो गया। जब उससे पूछा जाता, “निशा तुम ने इतनी हाई परसैंटेज कैसे प्राप्त की। क्षमा तो एक ओर तू तो पूरे कॉलिज को पीछे छोड़ गई।” वह अपनी आँखों में चमक लिए उत्तर देती, “सुक्षिति, वही स्ट्रालाईजेशन फारमूला” और बात को टाल जाती। कुछ मास के उपरान्त निशा को आनर देने के लिए कॉलिज में फंक्शन रखा गया। ऐजुकेशन मिनिस्टर को चीफ गैस्ट के स्थान पर बुलाया गया था। ऐजुकेशन मिनिस्टर के आने पर प्रोग्राम आरम्भ किया गया। पहले देश भक्ति के गीत आदि गाए। प्रिंसिपल ने अपनी स्पीच में निशा की खूब प्रशंसा की, “निशा हमारे कॉलिज की एक इंटेलिजेंट ही नहीं बहादुर लड़की भी है। अपनी जान की परवाह न करते हुए निस्संकोच दरिया में छलांग लगा कर अपनी सहेली को डूबने से बचा लिया। हमारा कॉलिज इस का आभारी है।” उस के पश्चात ऐजुकेशन मिनिस्टर की स्पीच शुरू हुई। वह कहने लगे, “मुझे इस बात का गर्व है कि एक बेटी ने दूसरी बेटी को बचा लिया। भारत जो एक बहादुर बेटी रानी झांसी का देश है आज भी उस की बेटियाँ बहादुरी से खाली नहीं। हमारे देश को अपनी बेटियों पर गर्व है। आओ हम सब संकल्प करें और पूरे संसार को ये नारा दें, ‘बेटी बचाओ - बेटी बड़ाओ।’ ऐजुकेशन मिनिस्टर की स्पीच के पश्चात प्राईज़ डिस्ट्रिब्यूशन फंक्शन आरम्भ हुआ तो निशा को एक बड़ी ट्रॉफी और एक लाख का ऐवार्ड कॉलिज की ओर से और दो लाख का ऐवार्ड ऐजुकेशन मिनिस्टर की ओर से दिया गया। पूरा पंडाल बहुत देर तक तालियों से गूँजता रहा। हर व्यक्ति निशा की तारीफ कर रहा था। हर वह व्यक्ति जो कभी निशा से कतरा कर निकल जाना चाहता था उस दिन उससे बात करके गर्व अनुभव कर रहा था। एक बातूनी लड़की कॉलिज की हीरोईन बन चुकी थी

## कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

“लहरों से डर नौका पार नहीं होती  
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।”

— हरिवंश राय बच्चन



**राजेन्द्र कुमार शर्मा**

अगर आप जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखते हो, तो सपने देखो वह भी खुली आँखों से। जिसने सपना ही नहीं देखा वह क्या स्वाक आगे बढ़ेगा। अगर आप को शिकार का शौक है, तो शेर का शिकार करें, चूहे बिल्ली, गीदड़ व अन्य छोटे-मोटे जानवर तो खुद ही भाग जाएंगे। आप छोटे शिकार में अपना वक्त जाया करेंगे तो हो सकता है कि शेर किसी भी वक्त आपका काम तमाम कर दे। कहने का मतलब है कि आप जिस फील्ड में भी जाना चाहते हो उस फील्ड के सर्वोच्च शिखर को फतह करने की बात हर वक्त आपके दिमाग और दिल में होनी चाहिए।

जब कभी हमारा सामना किसी कामयाब शख्स से होता है तो हमारे दिल में चुभन सी पैदा होती है कि आखिर कैसे ये कामयाब हुआ। जबकि मेरी पढ़ाई-लिखाई जीवन स्तर पर उससे बेहतर थी लेकिन हम सब भूल जाते हैं कि उसने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के सहारे अपने लिए नामुमकिन लक्ष्य को हासिल किया और हम सिर्फ अपने घमंड के कारण अपनी ही धुन में लगे रहे।

कामयाबी अचानक नहीं मिला करती उसके लिए निरंतर प्रयास करना होता है। जब अपने लक्ष्य को पाने के लिए ईमानदारी से प्रयास किए जाते हैं तो निश्चित तौर पर कामयाबी आपके कदम चूमती है। हमारा दुर्भाग्य है कि आमतौर पर हम यह सब नहीं कर पाते, क्योंकि हमारे जीवन के लिए लक्ष्य ही निर्धारित नहीं किया होता है।

यदि हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक है और विश्वास का स्तर पर्याप्त है तो हमारे लिए कोई भी काम असंभव नहीं होता। कार्य कैसा भी हो, उसका प्रारंभ करने से पहले दो तरह की प्रतिक्रिया देखने को मिलती है कैसा भी आसान कार्य क्यों न हो, कुछ लोग हमेशा कहते हैं कि यह असंभव है वहीं कुछ लोग मुश्किल से मुश्किल कार्य को देखने के बाद कहते हैं यह तो एकदम आसान है।

एक ही काम को एक व्यक्ति बिल्कुल नहीं कर पाता, जबकि दूसरा व्यक्ति उसे बड़ी आसानी से कर लेता है। ऐसा क्यों होता है? वास्तव में ऐसा हमारे दृष्टिकोण व हमारे विश्वास के स्तर के कारण होता है। हमारे दृष्टिकोण व हमारे विश्वास का जैसा स्तर होता है, हमें सफलता भी उसी अनुरूप मिलती है। नकारात्मक चिंतन अथवा दृष्टिकोण द्वारा हम नकारात्मक परिणामों को आमंत्रित करते हैं, जबकि सकारात्मक चिंतन अथवा दृष्टिकोण द्वारा हम सकारात्मक परिणामों को बुलावा देते हैं। अंत में किसी कवि ने कहा है कि

“कोशिश भी कर, उम्मीद भी रख, रास्ता भी चुन  
फिर उसके बाद थोड़ा मुक्कदर तलाश कर।”

## वो औरत

वो औरत .....

जो कठोर नजर आती है

ममता और प्रेम के भाव

दूर-दूर तक दिखाई नहीं देते

क्या वो निर्मम है?

कठोर है?

अक्सर इन प्रश्नों से वो

खुद भी घिरी रहती है

ढीठ और शिला की तरह

वो औरत .....

जाने कहाँ खो गई है

उस की सुन्दरता, उस का आकर्षण

जो नित नए आयाम तय करता था

चंचल आँखें जो एक बार में

हजारों बातें बयां करती थी

मीठी सी मुस्कान

जो बरबस ही किसी को भी

आकर्षित कर लिया करती थी

ठहर गई है, चुपचाप , मौन

ममता और प्रेम की मूर्ति

वो औरत .....

हालात और समय ने

अकस्मात ही.....

सब कुछ बदल दिया

बदल चुके हैं उस के लिए



सुन्दरता के मायने

आकर्षक दिखने की चाहत

खुद को घण्टों.....

शीशे में निहारने का मतलब

शुष्क भावों के सहारे चलती

वो औरत .....

खुद को बंद डायरी के....

पन्नों में.....

कभी पुरानी एलबम की तस्वीरों में

देखकर.....

गुजरे समय की

मीठी यादों के सहारे

समय और समाज के साथ

खुद को परिपक्व करती

आगे बढ़ती

कभी अनचाहे डर से

घबराकर.....

अकेले में रोती - सिसकती

निष्ठुर और नीरस भाव वाली

वो औरत .....



## भाग्य

कहा जाता है कि कर्म करने से भाग्य बदल जाता है परन्तु वास्तविकता में होता वही है जो भाग्य में लिखा होता है। आप चाहें तो रहने का स्थान परिवर्तित कर लो, जीवन शैली में बदलाव कर लो होता वही है जो भाग्य में लिखा होता है इसका एक जीवन्त उदाहरण मैं अपने एक निजी अनुभव से देना चाहूँगा।

दिल्ली एन सी आर के इलाके में जल संकट हमेशा से एक बड़ी समस्या रहा है हमारा घर भी गुडगाँव में है जहाँ हमेशा पानी की किल्लत रहती है जब मैं तीन वर्ष का था जब किसी तरह पैसे का इंतजाम करके पिता जी ने घर खरीदा पानी के लिए एक हैडपम्प भी लगवाया परन्तु न जाने क्यों उसमें पानी हमेशा रेत



आशीष कुमार

युक्त ही आता था हमने सभी यत्न करके देख लिए परन्तु सुधार नहीं हुआ। हम सारा पानी शाम को भरकर रख देते और सुबह जब रेत नीचे बैठ जाता तो उसे प्रयोग करते। यही सिलसिला कई वर्षों तक चला। फिर कालोनी में वाटर सप्लाई चालू हुई लेकिन तब निजी कलेक्शन नहीं होते थे चौराहों पर पानी के नल लगे होते थे और दुर्भाग्य वश नल हमारे घर से लगभग 500 मीटर के फासले पर था। पानी सुबह शाम ही आता था। चार बजे पानी आता था जबकि बर्तनों की लाइन 3 बजे सांय से ही लग जाती थी क्योंकि घर में लड़का मैं ही था तो सारा पानी मुझे ही भरना होता था। मेरे बचपन के कई वर्षों की शाम पानी के लिए लाइनों में बर्बाद हो गई। 2003 के लगभग भूमिगत जल काफी नीचे जाने के कारण लगभग पूरे इलाके के हैडपम्प तथा नलकूप बेकार हो गए जो संभ्रांत परिवारों से थे उन्होंने सब - मर्सिबल पम्प लगवा लिए पर निचला तबका कहां इसके काबिल था। फिर दौर शुरू हुआ पानी के टैंकरों का। टैंकर पर पानी के लिए रोजाना लोगों से झगड़ा होता। किसी न किसी तरह रोज मैं घर के पानी का इंतजाम करता। सन 2010 के आसपास घर की आर्थिक हालत कुछ सुधरी तो मैंने भी घर में सबमर्सिबल पम्प लगवा लिया। लगा कि दिन फिरंगे पर पानी खारा निकला। यूँ लगा मानो कि भाग्य में पानी के लिए तरसना ही लिखा है। घर में पानी होते हुए भी पानी के लिए लाइन में लगना पड़ता था। पर एक दिन जो आज वर्तमान में केन्द्रिय मंत्री हैं तथा वहाँ से सांसद हैं उन्होंने हमारे यहां एक चुनावी सभा को सम्बोधित करना था। कालोनी में आए, तो लोगों ने उन्हें अपनी समस्याएं बताई, उन्होंने लोगों से वादा किया कि महीने के अन्दर समस्या हटा दी जाएगी, लोगों ने सोचा कि ये भी एक चुनावी वादा बनकर रह जाएगा। परन्तु अगले कुछ महीनों में युद्ध स्तर पर काम हुआ। और सन् 2012 दिसम्बर में हमारे यहां नहर का भी पानी आया और पिछले 30 साल की कालोनी की समस्या खत्म हो गई मुझे भी यह लगा कि दुखों की कालरात्रि खत्म हुई। पानी अब दोनों समय आता था। जनवरी 2013 में मुझे चण्डीगढ़ से साक्षात्कार के लिए पत्र आया। फरवरी में साक्षात्कार हुआ तथा मार्च में ज्वाइनिंग हो गई सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि पता ही नहीं चला। चण्डीगढ़ आने के एक महीने बाद ही सरकारी घर मिल गया। जिन्दगी पटरी पर आ चुकी थी पर जैसे ही जून का महीना आया पानी चढ़ना बन्द हो गया क्योंकि मेरा घर तीसरी मंजिल पर था। शाम को पानी आता ही नहीं था, और सुबह 5 बजे पानी चला जाता था। केवल जीवन के चार महीने में पानी की खुशहाली का आनन्द उठा पाया। हाल अब भी वही है सुबह तीन बजे उठना पानी भरना, और कभी - कभी सुबह पानी नहीं आता है तो नीचे से भरकर लाना पड़ता है मई से लेकर नवम्बर तक यही हाल होता है जब पानी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है पानी नहीं मिलता और जो मिलता है वो बड़े परिश्रम के बाद। अब मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है क्योंकि मेरे भाग्य में पानी के लिए तरसना ही लिखा है और मैं जानता हूँ कि भाग्य बदला नहीं जा सकता चाहे आप कहीं भी रहो जो आपका नसीब हमेशा आगे चलता है मेरी भी नियति में यही लिखा है और अगले बीस वर्ष शायद ऐसे ही कटेंगे।



बाल बिहारी प्रजापति

## चाँदनी रातें

अंधकार को हटा,  
बिखेर रही उजाले की छटा।  
चाँदनी रातें चाँदनी रातें,  
देखो कैसा प्रकाश छा गया।  
गोरी का मुखड़ा शरमा गया।

चाँद को देखते ही,  
चकोर खुशी के गीत गा रहा।  
दूध के जैसी सफेदी,  
पहन निकली हो जैसे  
एक परी दिख रही वैसे चाँदनी रातें.....

हौले - हौले हवा जो चल रही,  
मौसम ने देखो कैसे अगड़ाई ली  
पेड़ों में चमक सी कैसी दिख रही,  
धरा की गोद भी चमक रही  
हीरे - मोती के जैसे। चाँदनी रातें.....

प्रियतम भी देखे, गोरी का मुखड़ा  
अचानक घूँघट जो गिर गया,  
चमक उठी उसकी बिंदिया  
चूड़ी कंगन कान के वे झुमके  
लौंग का वो हीरा,  
दो दिलों को मिलाती। चाँदनी रातें.....



आलोक शर्मा

## संयुक्त परिवार

सभी रिश्ते

गए हैं हार  
रिश्तों के अवशेष  
हैं संयुक्त - परिवार

गुम हो गए हैं

चाचा, ताऊ, मामा,  
दादा, नाना, नानी  
पति - पत्नि के  
बीच भी  
संवेदनार्थे संवाद  
मन से नहीं  
सिर्फ है जुबानी

‘पैसा’ और ‘स्व’ का

मन में है अंबार  
खो गया भीतर से  
वो आदर वो सत्कार

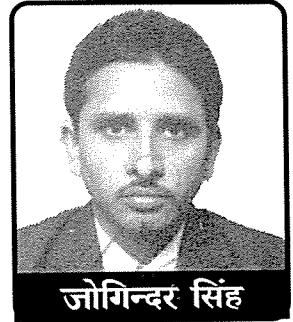
सुखद सदी से

लगते थे.....तब संयुक्त - परिवार  
भारतीय समाज की  
प्राण वायु और पहचान  
सौम्यता, सहजता, कृतज्ञता  
ही थे हमारी शान

लेकिन आज.....?

विघटन जारी है  
अब.....पति - पत्नि का  
एक साथ रहना ही  
माना जाता है  
संयुक्त - परिवार

## ध्यान से पढ़ना आँखों में पानी आ जाएगा



जोगिन्दर सिंह

बड़े गुस्से से मैं घर से चला आया। इतना गुस्सा था कि गलती से पापा के ही जूते पहन के निकल गया। मैं अब बस घर छोड़ दूँगा और तभी लौटूँगा जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊँगा।

जब मोटर साइकिल नहीं दिलवा सकते थे तो क्यों इंजीनियर बनाने के सपने देखते हैं।

आज मैं पापा का पर्स भी उठा लाया था जिसे वो किसी को हाथ तक नहीं लगाने देते थे। मुझे पता है इस पर्स में पैसों के हिसाब की जरूरी डायरी होगी। पता तो चले कितना माल छुपाया है। माँ भी इसलिये हाथ नहीं लगाने देती।

जैसे ही मैं कच्चे रास्ते से सड़क पर आया मुझे लगा जूतों में कुछ चुभ रहा है। मैंने जूते निकाल कर देखे, मेरी एड़ी से थोड़ा सा खून निकल आया था जूते की कोई कील निकली हुई थी। दर्द तो बहुत था पर मुझे जाना ही था घर छोड़ कर।

जैसे ही कुछ दूर चला, मुझे पाँव में गीला गीला लगा। सड़क पर पानी बिखरा पड़ा था, पाँव उठा कर देखा तो जूते का तला टूटा था।

जैसे तैसे लगड़कर बस स्टॉप तक पहुँचा, पता चला एक घण्टे तक कोई बस जानी नहीं थी। मैंने सोचा क्यों न पर्स की तलाशी हो जाए। मैंने पर्स खोला।

एक पर्ची दिखाई दी। पर्ची पर लिखा था लैपटाप के लिए 40 हजार उधार लिये। पर लैपटाप तो घर में मेरे पास है।

दूसरा एक मुड़ा हुआ पन्ना देखा। उसमें उनके ऑफिस की किसी हॉबी डे का लिखा था उन्होंने हॉबी लिखी अच्छे जूते पहनना। ओह अच्छे जूते पहनना। पर उनके जूते तो पुराने थे।

माँ पिछले चार महीने से हर पहली को कहती नये जूते ले लो और वे हर बार कहते - “अभी तो छः महीने और चलेंगे।” मैं अब समझ गया कितने चलेंगे।

तीसरी पर्ची निकली

तीसरी पर्ची पर एक्सचेंज आफर थी पुराना स्कूटर दीजिए एक्सचेंज में नयी मोटर साइकिल ले जाइये। पढ़ते ही दिमाग घूम गया। पापा का स्कूटर.....ओह! और मैं घर पहुँचा। न पापा थे न स्कूटर था। मैं समझ गया कहाँ गए। मैं दौड़ा और एजेसी पहुँचा, पापा वहीं थे। मैंने उनको गले लगा लिया और आँसुओं से उनका कंधा भिगो दिया। “नहीं पापा नहीं, मुझे नहीं चाहिए मोटर साइकिल। बस आप नये जूते ले लो और मुझे बड़ा आदमी बनना है वो भी आपके तरीके से।”

माँ एक ऐसा बैंक है जहाँ आप हर भावना और दुःख जमा कर सकते हैं और पापा एक ऐसा क्रेडिट कार्ड हैं जो बैलेंस न होते हुए भी हमारे सपने पूरे करने की कोशिश करते हैं।





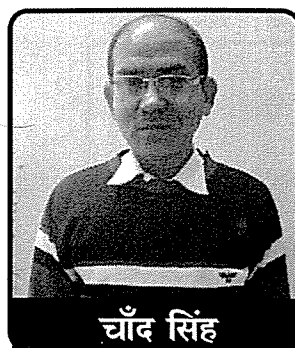
अरूण कुमार वशिष्ठ

### यादें

मैं स्वामोश बैठा स्वामोश समुद्र को देखता रहा।  
चंचल मचलती नदियों को अपने मे समा लेना  
हमारा राज सीने में छुपाए शांत नजर आना  
मैं स्वामोश.....

बढ़ते चाँद को अपने करीब आते देखना  
सैकड़ों लहरों का मिलने के लिए बेचैन हो जाना  
कुछ लहरों का बीच में ही समाया जाना  
फिर कुछ का दूर किनारों तक चले आना  
छिपे राजों को किनारों पर उगल जाना  
फिर वापिस लौट जाना फिर स्वामोश हो जाना  
मैं स्वामोश.....

आज पूर्णिमा की रात है समुद्र मचलने लगा है  
लहरे दिवानी सी हुई चाँद को मिलने की  
चाह में कुछ ज्यादा ही उठने लगी है  
कुछ किनारों को पार कर गई और तब  
एक लहर न जाने कब मुझे  
अपने साथ खींच कर ले गई  
कुछ देर तक मैं उससे लड़ता रहा  
फिर न जाने कब मैं स्वामोश सा  
समुद्र की लहरों में लिपटा हुआ  
न जाने उसकी स्वामोश गहराईयों में कहाँ खो गया  
और मैं स्वामोश बैठा स्वामोश समुद्र को देखता रहा



चाँद सिंह

### ऐ दोस्त, तुम मुझे खो दोगे।

एक रोज हम जुदा हो जाएंगे,  
न जाने कहाँ खो जाएंगे।

तुम लाख पुकारोगे हमको  
पर लौट के हम न आएंगे।

थक हार के दिन के कामों से  
जब रात को सोने जाओगे।

देखोगे जब तुम फोन को,  
पैगाम मेरा न पाओगे।

तब याद तुम्हें हम आएंगे,  
पर लौट के हम न आएंगे।

इक रोज ये रिश्ता छूटेगा,  
दिल इतना ज्यादा टूटेगा।

फिर कोई न हमसे रूठेगा,  
हम न आँखे खोलेंगे,

तुम से कभी न बोलेगें।

आखिर उस दिन तुम रो दोगे,  
ऐ दोस्त तुम मुझे खो दोगे।

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का  
अंग मानता हूँ ।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद



राजकुमारी 'राज'

## बहुत सोरवा / बहुत ओरवा

- सोरवा :- दूसरों की गलती निकाल कर निर्णय देना ।  
 ओरवा :- अपनी गलती को स्वीकार करना ।  
 सोरवा :- अपने मतलब के लिए किसी के ठेस पहुंचाना ।  
 ओरवा :- किसी के दुखी हृदय पर मरहम लगाना ।  
 सोरवा :- बिना सोचे समझे कुछ भी बोल देना ।  
 ओरवा :- अपनी जुबान पर काबू पाना ।  
 सोरवा :- दूसरों के लिए नियम बनाना ।  
 ओरवा :- खुद नियमों का पालन करना ।  
 सोरवा :- दूसरों को सुधारने में लगे रहना ।  
 ओरवा :- खुद को सुधारने की कोशिश करना ।  
 सोरवा :- बिना सचाई जाने कुछ भी बोल देना ।  
 ओरवा :- पूरी सचाई जानने की कोशिश करना ।  
 सोरवा :- दूसरों के सताना ।  
 ओरवा :- खुद कुछ भी बर्दाश्त करना ।  
 सोरवा :- दूसरों को बेवकूफ समझना ।  
 ओरवा :- आप बेवकूफ कहाना ।  
 सोरवा :- दूसरों से अपनी ईज्जत करवाना ।  
 ओरवा :- आप दूसरों की ईज्जत करना ।  
 सोरवा :- दिन में सपने देखना ।  
 ओरवा :- सपने पूरे करने के लिए खुद मेहनत करना ।  
 शिक्षा :- जो काम आप दूसरों से चाहते हो, पहले खुद पर अमल करें। दूसरे देखा देखी अपने आप सुधार जायेंगे, अगर फिर भी आपको लगे कि दूसरे सही नहीं कर रहे, फिर उससे दूरी बना लें। फालतू में अपना समय खराब न करें।

## भारत देश महान

हमारा भारत देश महान

हमें अपने देश पर है, अभिमान,  
 यहां गंगा - यमुना - ब्रह्मपुत्र  
 सरस्वती का है, वास  
 यहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई  
 आपस में सब मिलकर भाई, रहते साथ - साथ  
 हमें अपने देश पर है, अभिमान ।

हमारा भारत देश है, निराला

हरा भरा फल - फूलों वाला  
 यहां हुए वीर अनेक महान  
 करते थे अपने देश से प्यार  
 कर दी उन्होंने, अपने देश पर जान कुर्बान  
 हमें अपने देश पर है, अभिमान ।

हमारा भारत देश है, अति प्यारा

बड़ा विशाल और, अद्भूत न्यारा  
 यहां भिन्न - 2 भाषाएँ और बोली  
 अलग - अलग वेशभूषा निराली  
 फिर भी रहते एक समान  
 हमें अपने देश पर है, अभिमान ।

हमारे भारत देश की मिट्टी ऐसी,

यहां लेते जन्म भगवान  
 अलग - अलग है धर्म यहां पर  
 अलग - अलग है रिति - रिवाज यहाँ पर  
 फिर भी करते, सब धर्मों का सम्मान  
 हँसते गाते, गले मिलते सब, साथ - साथ

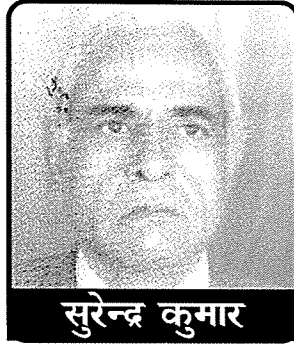
हमें अपने देश पर है, अभिमान ।

बड़े - बड़े ऋषि - मुनि, योद्धा जन्मे यहां पर  
 वेद, पुराण, कुरान, गीता का सार यहां पर,  
 यहां सोने के दिन, चाँदी सी है रात  
 यहां बहाती नदियाँ, अमृत की धार  
 यहां हिमालय पर्वत, सबका पहरेदार ।

भारत की संस्कृति का सभी जगह होता, गुणगान  
 फिर सोने की चिड़ियाँ कहलाएँ, सबका है यही अरमान  
 ऐसा प्राकृतिक सौन्दर्य वाला है, हमारा भारत देश महान  
 हमें अपने देश पर है, अभिमान ।



नरेन्द्र बड़गुजर



सुरेन्द्र कुमार

## लोग अब मुखौटा नहीं लगते

बाजार में कई प्रकार के मुखौटे  
आने लगे क्योंकि लोग अपनी  
वास्तविकता छुपाने के लिए  
अपने चेहरे पर नए नए मुखौटे लगाने लगे।

इस कारण समाज में अपराध पनपने लगा  
अत्याचार, दुराचार और भ्रष्टाचार बढ़ने लगा  
कोई भी किसी प्रकार का गलत काम कर जाता  
मुखौटा लगा उसके अपराध से बच जाता  
ऐसा समय आ गया कि मुखौटों की मांग बढ़ गई  
इसलिए मुखौटा बनाने वालों की कमी आ गई  
वे बाजार में मुखौटों की माँग देख घबरा गए  
मनुष्य भी मुखौटा न मिलने से घबराए।

फिर मनुष्य ने नया आविष्कार किया  
स्वयं अपना रंग बदलने का ढंग अपना लिया  
अब वह गिरगिट से भी तेजी अपनाता है  
पलक झपकते ही अपना रंग बदल जाता है।  
इसलिए उसके मन में क्या बात है  
इसे प्रयत्न करने पर भी कोई समझ नहीं पाता है  
अब वह मुखौटा नहीं लगाता क्योंकि  
उसके भीतर क्या छुपा है यह वह स्वयं समझ नहीं पाता।

## यह कैसी मुस्कान

कैसी है यह मुस्कान  
रहती है जो सदा ओठों पर तुम्हारे  
नहीं रहती यह सीमित ओंठो तक  
छा जाती है चेहरे पर भी तुम्हारे।

गुजरती हो तुम जिधर से  
पहुँचती तुम्हारे संग वहाँ  
फैल कण कण वातावरण में  
प्रफुल्लित करती सब जगह।  
खुशी नहीं गम के क्षणों में भी  
नहीं छोड़ती यह साथ तुम्हारा  
रहस्य है कैसे बदलती हो  
गम को तुम मुस्कान में।

यह बाह्य नहीं आन्तरिक शक्ति है  
रहती जो छिपी तुम्हारे अन्तर मन में  
करती है यह परिवर्तित गम को भी  
तुम्हारे चेहरे की मुस्कान में।  
चाहत है यह हमारी कि यह मुस्कान  
चेहरे पर तुम्हारी सदा बनी रहे  
न केवल तुमको हमको अपितु  
सब जग को पुलकित करती रहे।

हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है । — मारवन लाल चतुर्वेदी

किसी देश को एकता के सूत्र में बाँधने का सबसे स्थायी सुदृढ़ साधन उसकी भाषा है ।

— राहुल सांकृत्यायन



## आत्मग्लानि



समीर कुमार

आज वह बूढ़ा फिर मास्टर साहब के कमरे के चौखट के पास बिना पूछे बैठ गया था। बूढ़े का नाम यद्यपि मनभावन महतो था, लेकिन अपने अक्खड़ और स्वाभिमानी स्वभाव के कारण वह कभी किसी के मन को भाया नहीं। यहाँ तक कि पुत्र और पुत्रवधु ने भी उसे घर से निकाल दिया था। घर से निष्कासित मनभावन एक छोटे से कस्बे में चला आया था। एक विद्यालय जो बस्ती से काफी दूर था के समीप अपने ही हाथों घास-फूस से एक झोपड़ी बनाकर रहने लगा था। उसके जीवन यापन का एकमात्र साधन था एक छोटी दुकान जो इसने झोपड़ी में ही खोल रखी थी। उसकी दुकान में विद्यालयी बच्चे की आवश्यकता पूर्ति हेतु ही सामान रखा। रोज जितने की बिकती उतने के ही अगले रोज खरीदकर लाता। स्लेट, पेंसिल, कागज, दवात के अलावा उसके पास कुछ लेमनचुस भी होता जो वह छोटे बच्चों को मुफ्त दिया करता। उसके स्नेह को देखकर गाँव के बच्चे उसे मन्नूबाबा या सिर्फ बाबा कहकर पुकारते जबकि बड़े बुजुर्ग 'महतो जी'। आर्थिक कमजोरी के कारण मन्नू साफ सुथरा नहीं रह पाता था। कभी-कभी उसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती, खासकर तब जब बच्चे छुट्टी के कारण स्कूल नहीं आते। मन्नू के ग्राहक सिर्फ बच्चे थे इसलिए उसकी भावना भी बच्चों के साथ रहते रहते निश्छल हो चली थी। ऐसे गुजरते दिनों में मन्नू के लिए मास्टर साहब आशा की एक नई किरण बनकर शहर में पधारे थे। शहरी संस्कृति में पले बड़े मास्टर साहब में ज्ञान की कोई कमी नहीं थी, एम० ए०, एम० फिल० के अतिरिक्त उन्होंने एल० एल० बी० कर रखा था, किन्तु सरस्वती के पुजारी मास्टर साहब संस्कृति के भिखारी थे। विचारों के धनी मास्टर साहब गरीबों के प्रति न्याय की वकालत तो खूब करते किन्तु जब उन पर शहरी चकाचौंध वाली संस्कृति हावी होती तो ग्रामीण बस्ती के फटे चिटे और मैले कपड़े वाले स्वाभिमानी गरीब अक्सर उनके घृणा का शिकार हो जाते। जब ट्रांसफर होकर मास्टर साहब इस विद्यालय में नये नये आये थे तो उनका सबसे पहला मित्र जो बना था- वह ऐसे ही परिधानों वाला एक गरीब किन्तु दरियादिल इंसान 'मन्नू' था। किन्तु जल्दी ही मास्टर साहब उससे घृणा करने लगे। हालांकि इसका एक कारण यह भी था कि मन्नू ने अपने स्वभाव से लाचार हो उन्हें जोक की तरह जकड़ लिया था। जैसे ही विद्यालय में छुट्टी होती, वह मास्टर साहब से बातें करने चला आता। वह ऐसी बातें तब तक करता रहता जब तक कि मास्टर साहब का खाना पक कर तैयार नहीं हो पाता। उसके मन में मास्टर साहब से दाल सब्जी पाने की आशा रहती थी, और वह अपनी कोशिश में अक्सर सफल रहता। वह उधार की दाल सब्जी के साथ अपने हाथ की बनायी हुई मोटी दो रोटी खाकर संतुष्ट हो जाता। और फिर हुक्का पीते-पीते अनेक चर्चाएँ छेड़ देता। कभी-कभी उसकी अनर्गल चर्चाओं में काम की बातें भी होती थी किन्तु उस क्षण मास्टर साहब के लिए उसका कोई महत्व नहीं होता। मास्टर साहब की पैनी नजर उसके धूम्रपान वाली आदत को भेदती रहती जिसके वे बिल्कुल खिलाफ थे। इसलिए मन्नू नेक दिल का इंसान होने के बावजूद मास्टर साहब के मन से उतरने लगा था। मास्टर साहब मन ही मन इस भिखारी से पिंड छुड़ाना चाहते थे इसलिए एक दिन उन्होंने एक नायाब तरीका ढूँढा जिससे साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। यह तरीका था मन्नू को चोर

और बेईमान साबित करने का। मास्टर साहब आज ग्री-प्लांड थे। मन्नु पूर्व की भांति आज भी जैसे बैठा तो जरा कड़ा रूख अपनाते हुए मास्टर साहब बोले 'महतो। कल मैंने अपने मेज पर पाँच सौ रुपये का नोट रख छोड़ा था किन्तु तेरे जाने के बाद वह गायब था। तुझे मैं रोज-रोज दाल सब्जी इसलिए देता हूँ कि तू मेरे घर में सेंध मारे? बता मेरा रूपया कहाँ है?' मन्नु चकित था मास्टर साहब की बातें सुनकर। वह गिड़गिड़ाने लगा-साहब। मैं गरीब जरूर हूँ किन्तु आज तक किसी का कुछ चुराया नहीं। मैंने एक नये पैसे की भी चोरी नहीं की। पाँच सौ की तो बात ही अलग है। अपने जीवन में अब तक मैंने इतने बड़े नोट देखे भी नहीं है चोरी कैसे करूंगा। मास्टर साहब अब कड़क आवाज में बोले - तेरे सिवा यहाँ कल कोई नहीं आया था। तेरे आने से तुरंत पहले मैंने ये नोट ब्रीफकेस से निकाल कर रखा था और तेरे जाने के बाद जब मैंने मेज पर नजर दौड़ायी तो वह गायब था। फिर तेरे सिवा कौन ले सकता है? तेरे बाप का भूत आयेगा पैसे लेने? मन्नु अब पैरों में गिरकर बोला "मास्टर साहब। ऐसा इल्जाम ना लगाओ मैं चोर नहीं हूँ, रोटी पर नमक रख कर खा सकता हूँ किन्तु चोरी नहीं कर सकता। मास्टर साहब भी कहाँ चुप रहने वाले थे। उन्होंने कहा-यदि तुम ईमानदार होते तो तेरा बेटा तुझे घर से क्यों निकालता। मन्नु रोने लगा। उसे ये बातें तीर की तरह हृदय में चुभ गयी थीं। वह भरपूर स्वर से बोला - बस करो मास्टर साहब अब, मैं चलता हूँ फिर पलट कर तेरे घर की ओर कदम नहीं रखूँगा। मास्टर साहब की पॉलिसी काम आ गई थी। उन्हें संतोष हो गया कि मन्नु महतो से अब पिंड छूट गया है। दिन अबाध गति से बीतने लगे। मन्नु अब मास्टर को देखता तो नाक-भौं सिकोड़ लेता। दोनों में राम-राम तक नहीं होती। किन्तु एक दिन घटना ने अचानक मोड़ लिया। रात्रि का समय था और बरसात का महीना। शाम की फुहारें रात होते होते मूसलाधार वृष्टि में बदल चुकी थी। चारों ओर धुंध अंधेरा छाया हुआ था। अपनी हथेली भी लालटेन की रोशनी में ठीक से नहीं दिखती थी। मेढ़क की टर्-टर् और झिंगुर की किर्किर् आवाजें रात को और भयावनी बना रही थी। लगातार बारिश से खेत पथार पानी से लबालब भर चुका था। विद्यालय परिसर का पानी भी मास्टर साहब के कमरे में घुसने के लिए आतुर था। मास्टर साहब को आज अकेलापन सता रहा था। रह रह कर भय से काँप उठते थे। ग्रामीण बस्तियों में ऐसे समय में साँप निकलने की संभावना बहुत बढ़ जाती है यह उन्हें पहले ही मन्नु बता चुका था। इसलिए जैसे ही आज मनु की अनर्गल बातों का ख्याल उन्हें आता मन भय से और भारी हो जाता। बस्ती विद्यालय से इतनी दूर थी कि ट्रक का हार्न भी वहाँ तक नहीं पहुँचे। ऐसी परिस्थिति में "मन्नु" ही एक मात्र पड़ोसी था-मास्टर साहब का। रह रह कर मन्नु और उसकी अनर्गल बातों की याद आज आ रही थी। मन्नु ने अल्प काल की मित्रता में ही मास्टर साहब को बहुत कुछ सुना रखा था। जैसे फलाँ व्यक्ति का जहर उसने कैसे मुँह से चूसकर निकाला था और जान बचाई थी। एक बार अमुक व्यक्ति को गेहुँअन ने धर दबोचा था तो मनु तुरन्त अपनी दवाई लेकर वहाँ पहुँचा था और मुख से विष चूसकर अपना मुँह दवाई से धो लिया था। मास्टर साहब तरह-तरह की बातें सोचकर स्तब्ध थे। नींद न जाने कहाँ भाग गई थी। वे अपने तरख से नीचे उतरे और बरामदे की ओर बढ़ने लगे लघुशंका करने हेतु। तभी उनकी नज़र साइकिल के टायर की तरह पसरी एक काली वस्तु पर पड़ी। नजदीक जाकर देखा तो रूह काँप उठी वे चीत्कार कर उठे। वह साँप ही था, जिसकी आशंका आज उन्हें शाम से हो रही थी। वह काला साँप पूरे दो गज लंबा था जो केंचुल छोड़ कर बैठा था। मरता क्या नहीं करता। वह पूर्व की दुश्मनी या घृणा को भूल गये और मन्नु को बाबा-बाबा कहकर पुकारने लगे। मन्नु भला क्यों जवाब दे, उसकी

अक्स्वड़ता किस काम की थी। वह मास्टर की करूण आवाज सुनकर भी चुप रहा। अन्त में मास्टर साहब खुद लाठी लेकर कमरे के दूसरे दरवाजे से बाहर निकले और खेतों की मेड़ पर चलते हुए मन्नू की झोपड़ी के पास पहुँचे। दर्जनों बार जब उन्होंने मन्नू को विभिन्न नामों से पुकारा तो कड़क आवाज़ में मन्नू ने पूछा - “कौन है” मास्टर साहब गिड़गिड़ाते हुए बोले - “मैं हूँ मन्नू भाई। तेरा पुराना दोस्त मास्टर! भाई संकट में फँसा हूँ। मुझे अकेले भय लग रहा है, एक दो गज लंबा साँप मेरे बरामदे में कुंडली मार कर बैठा है मन्नू बाबा। तू ही मेरा रक्षा कर सकता है” मन्नू कब चूकने वाला था, वह तपाक से बोला - “मैं क्यों तेरे पास जाऊँ। मैं चोर हूँ बेइमान हूँ। इसी चरित्र के कारण तो मुझे बेटे ने घर से निकाला है।” मास्टर साहब गिड़गिड़ाते हुए पुनः बोले - “मुझे माफ करो मन्नू बाबा। मैंने आप पर झूठा इल्जाम लगाया था। मुझे आपके धूम्रपान से गुरेज था, इसलिए मैंने पैसे चोरी होने का बहाना ढूँढा था। मेरी नज़रों में आपसे ज्यादा कोई इमानदार नहीं है।” मास्टर के अपराध बोध से मन्नू का निश्छल और पवित्र हृदय तुरंत पसीज गया। वह मास्टर साहब से साँप की रूप रेखा पूछने लगा - लंबाई कितनी थी? रंग कैसा था। मस्तक तक खड़ाऊँ के चिन्ह थे क्या .....? आदि - आदि। इसे अपने जवानी के दिन याद आने लगे। न जाने कितने व्यक्तियों की रक्षा वह अब तक साँपों से कर चुका था उसके जहर को शरीर से उतारने में। उसके पास हमेशा साधु की दी एक दवाई रहती थी। उसी साधु ने उसे जहर उतारने के मंत्र भी सिखाये थे। जब कोई विषधर किसी को डँसता था तो वह अपने मुँह से जहर खींचता था, फिर दवाई से कुल्ला कर लेता था ताकि उसके ऊपर जहर का असर नहीं हो। यूँ तो वह दर्जनभर कहानियाँ अब तक मास्टर साहब को सुना चुका था, किन्तु मास्टर साहब उसे अनर्गल ही मानते थे उस वक्त। लेकिन आज वह फिर से मास्टर साहब के जेहन में भी तरोताजा हो रहा था। सच आवश्यकता ही किसी व्यक्ति, वस्तु के महत्व को दर्शाती है। खैर, मास्टर साहब ने पल भर में ही मन्नू द्वारा किये गये सभी सवालों का जवाब दिया। मन्नू ने अपने अनुभव की आँख से तुरन्त बता दिया कि वह गेहूँअन है। उसका काटा ज्यादा देर तक नहीं ठहरता। किन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं मेरे रहते मास्टर साहब आपको कुछ नहीं होगा। वह अपनी झोपड़ी से निकलकर सड़क पर आ चुका था। खेत तालाब से सदृश नज़र आ रहे थे आज। मेड़ों का पता नहीं चलता था। लेकिन मास्टर साहब द्वारा अपराध बोध की बातों ने उसके हृदय में आज फिर ममता और प्रेम का दरिया बहा दिया था। वह हेकड़ी भरने लगा था। मेड़ों पर चलते हुए वह कह रहा था कि मैं नाग के विष को भी चूस सकता हूँ। मैं अजगर को भी लाठी से मार सकता हूँ। यदि साँप विषधर नहीं हो तो बस मंत्रों से ही जहर उतार देता हूँ। मन्नू आगे - आगे चल रहा था और मास्टर साहब हाथ में चोर बत्ती लिये पीछे - पीछे। अस्सी वर्ष की उम्र में भी वह रात के अंधेरे में इस फुर्ती से चल रहा था, मानो मौत उसके लिए जीवन से ज्यादा महत्वपूर्ण हो। बातें करते करते मन्नू अब मास्टर साहब के कमरे पर पहुँच चुका था। चारों और सन्नाटा छाया हुआ था। मन्नू चोर बत्ती लिये घर के कोने - कोने को छान रहा था किन्तु साँप कहीं नहीं था। कहा जाता है कि साँप, पवन होता है कब कहाँ प्रकट हो जाये और कब विलुप्त हो जाये इसका कोई ठिकाना नहीं। मन्नू के साथ - साथ मास्टर साहब भी लालटेन लिये साँप को तलाशते रहे। अन्त में दोनों की तसल्ली हो गयी कि साँप कहीं नहीं है। मन्नू अब बाहर की खाट पर पसर गया और मास्टर साहब अन्दर वाले तरख्त पर। मास्टर साहब को अब भी नींद नहीं आ रही थी। साँप की दहशत ने जम्हाई राजा को दूर भगा दिया था। किन्तु मन्नू जल्द ही खरटि भरने लगा। मास्टर साहब मन्नू का सोते देख सोना चाह रहे थे। इसलिए एक बार फिर लघुशंका कर



सोने की कोशिश करनी चाही। इसी कोशिश में वह तख्त से उठ बैठे और हड़बड़ा कर जूता पहनने लगे। पैर जूते में डालने वाले ही थे कि मुंह से अचानक एक चीख निकली और वह धड़ाम से तख्त पर गिर कर बेहोश हो गये। वह काल सर्प जूते में बैठा था और मास्टर साहब को डंस लिया था। विष का प्रभाव इतना तीव्र था कि उन्हें दर्द का पता भी नहीं चला और वह पलभर में ही बेहोश हो गये। इधर दर्दनाक चीख ने मन्नू की नींद खोल दी उसे समझ में आ गया कि मास्टर साहब उस सर्प के डंक के शिकार हो चुके हैं। उसने आवाज लगाई किन्तु मास्टर साहब बेहोश थे। वह फुर्ती से उठा और लालटेन की बत्ती को तेज किया। लालटेन मास्टर साहब अक्सर कमरे के अन्दर रखते थे किन्तु आज मति बदली थी। उन्होंने बरामदे की खूँटी में ही इसे टाँग दिया था। खैर जो होना था वह हो चुका था इसलिए मन्नू फटाफट तख्त पर चढ़ा और मुँह से जहर को चूसने लगा। लेकिन मास्टर साहब को कुछ भी पता नहीं चला। जब सुबह हुई तो मास्टर साहब की नींद खुली। चिड़िया अपनी घोंसला छोड़ चुकी थी। दिन पूरी तरह निकल चुका था। मन्नू खाट पर नहीं था। उन्होंने झोपड़ी की ओर दृष्टि गड़ाई, देखा वहाँ भीड़ लगी है बच्चे निराश चेहरे लिए घूम रहे हैं। कोई बाँस काटने में लगा है तो कोई सफेद कपड़े के इंतजाम में भाग दौड़ कर रहा है। यह दृश्य देखकर मास्टर साहब का दिल बैठ गया। वह फिर तख्त पर बैठ गये। पल भर बैठने के बाद उन्होंने फिर हिम्मत जुटायी और सहमें कदम से धीरे-धीरे मन्नू की झोपड़ी की ओर रुख किया। झोपड़ी के पास पहुँचते ही वे फूट फूट कर रोने लगे। रोते हुए ही उन्होंने कहा - तू धन्य है बाबा। तूने मेरी खातिर अपनी जान दे दी। तेरी मित्रता भी धन्य है। हे ईश्वर तूने उस काल सर्प को इसके लिए ही भेजा था। तेरी लीला अपरंपार है।.....मास्टर साहब को रात की घटना का स्मरण हो चुका था। उन्होंने जब रात को अपने सर्पदंश और मन्नू के अपने पास सोने वाली घटना का जिक्र किया तो लोगों को भी समझते देर नहीं लगी। दवाई की शीशी झोपड़ी में अब भी उसी स्थान पर मौजूद थी जहाँ वह हमेशा रहती थी। सबने एक स्वर में कहा, निश्चय ही मन्नू उस साँप के जहर को मास्टर साहब के शरीर से उतारने के बाद अपनी दवाई लेने झोपड़ी आया होगा, लेकिन जहर इतना तीव्र था कि वह दवाई तक पहुँच नहीं सका। झोपड़ी के आगे ही बेहोश हो गया, और उसके प्राण पखेरू उड़ गये। यदि वह झोपड़ी से दवाई लाकर मास्टर साहब के अन्दर फैल रहे जहर को चूसता तो मास्टर साहब का ठहरना नामुमकिन था। इसलिए उसने मास्टर साहब की प्राण रक्षा हेतु अपनी जान की बाजी लगा दी। ऐसी मर्मस्पर्शी कथानक पर सभी की आँखें गमगीन हो चुकी थी। सबने इस परोपकारी बाबा के लिए जयघोष किया। लोग अंत्येष्टि के आयोजन में उसी तरह जुट गए जिस तरह एक महान संत के लिए जुटते हैं। स्वाभिमानी मन्नू ने अपने स्वामित्व की रक्षा मरते दम तक की थी। मर कर वह मित्रता की इमानदारी का परिचय दे गया था। एक मूक की तरह खड़े उसके परम मित्र मास्टर साहब अचानक बोल पड़े - मैं अपने वेतन की राशि से इस परोपकारी संत की स्मृति में विद्यालय परिसर में ही एक स्मारक बनाऊँगा। शायद अपनी आत्मग्लानि को मिटाने का अब यही एकमात्र तरीका बचा था मास्टर साहब के लिए .....।

उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो, अर्थात् हिन्दी ।

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

दिनांक 21 जून 2016 को दोनों कार्यालयों लेखा परीक्षा व लेखा व हकदारी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दोनों कार्यालयों के प्रांगण में विशेषज्ञों द्वारा योग करवाया व इस पर भाषण दिया गया।

रक्तदान शिविर: - कार्यालय में पी.जी.आई. चण्डीगढ़ के सहयोग से दिनांक 10 अप्रैल 2015 को एक रक्तदान शिविर लगाया गया जिसमें कार्यालय की रक्तदान सोसायटी के तत्वाधान में 62 से अधिक कर्मिकों ने रक्तदान किया।

स्वतन्त्रता दिवस समारोह :- कार्यालय परिसर में दिनांक 15 अगस्त 2016 को धूमधाम से स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमती महुआ पाल प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) हरियाणा थी। जबकि समारोह की अध्यक्षता श्री कर्णसिंह, महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा की। इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण करने के साथ-साथ कार्यालय के कर्मिकों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह : कार्यालय में दिनांक 31 अक्टूबर 2016 से 5 नवम्बर 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। श्री कर्णसिंह महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा ने कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूक रहने की शपथ दिलाई। सप्ताह के दौरान सतर्कता एवं जागरूकता विषय पर स्लोगन एवं पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। सम्बन्धित विषय पर एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में उपहार देकर सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय एकता दिवस : लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती के अवसर पर 31 अक्टूबर 2016 को कार्यालय में राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन) द्वारा सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की शपथ दिलाई गई।

सद्भावना दिवस : - कार्यालय में दिनांक 19 नवम्बर 2015 से 25 नवम्बर 2016 तक सद्भावना दिवस मनाया गया। इन अवसर पर सभी कर्मिकों ने आपसी सद्भाव व मानवीय सद्भावना की शपथ ली।

खेल कूद गतिविधियाँ :- इस कार्यालय के प्रतिभावान आलराउन्डर एवं रणजी ट्राफी खिलाड़ी श्री विपुल शर्मा को आई. पी.एल. ट्राफी के लिए सनराइज हैदराबाद की टीम में खेले तथा टीम 2016 आई.पी.एल. प्रतियोगिता जीती।

इस कार्यालय के क्रिकेट खिलाड़ी श्री गुरिन्द्र सिंह, हिमांशु चावला व जसकरण सोही राष्ट्रीय रणजी क्रिकेट ट्राफी में खेले।

इस कार्यालय के द्वारा दिनांक 27 जनवरी 2016 से 29 जनवरी 2016 तक उत्तरी क्षेत्र लेखा परीक्षा व लेखा विभाग क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में सात टीमों ने भाग लिया तथा हमारे कार्यालय की टीम ने यह प्रतियोगिता जीती। दिनांक 7 मार्च 2016 से 9 मार्च 2016 तक नागपुर में अन्तर क्षेत्री क्रिकेट प्रतियोगिता में हमारे कार्यालय की क्रिकेट टीम के द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिन्दी और देवनागरी का प्रचार आवश्यक है।

- लाला लाजपत राय



## झलकियां



हिन्दी दिवस समारोह के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते  
श्री गुलाम दीन वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)



हिन्दी परववाड़े के अवसर पर हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का अवलोकन करते अधिकारीगण





हिन्दी परववाड़े में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि श्री संदीप लाल प्रधान-निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़



हिन्दी परववाड़े के अवसर पर अपना संदेश देते हुए मुख्य अतिथि श्री संदीप लाल प्रधान-निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़



## झलकियां



हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्री का संदेश प्रस्तुत करते डॉ सुरेन्द्र कुमार वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा)



सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान कर्मचारियों को शपथ दिलाते हुए माननीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा श्री कर्ण सिंह जी



## झलकियां



स्वतंत्रता दिवस समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले कलाकारों को पुरस्कार प्रदान करते माननीय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा श्री कर्ण सिंह जी



कार्यालय परिसर में आयोजित रक्तदान शिविर के अवसर पर रक्तदान करते कर्मचारी व अधिकारीगण



## अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्द

प्रशासन संबंधी शब्दावली -

संकलन : संजीव कुमार

| क्रमांक | अंग्रेजी       | हिन्दी                                         |
|---------|----------------|------------------------------------------------|
| 1.      | Accountability | जवाब देही                                      |
| 2.      | Ad Hoc         | तदर्थ                                          |
| 3.      | Adjournment    | स्थगन                                          |
| 4.      | Adjustment     | समायोजन                                        |
| 5.      | Agenda         | कार्यसूची                                      |
| 6.      | Agreement      | अनुबंध                                         |
| 7.      | Allotment      | आबंटन                                          |
| 8.      | Allowance      | भत्ता                                          |
| 9.      | Appendix       | परिशिष्ट                                       |
| 10.     | Approval       | अनुमोदन                                        |
| 11.     | Article        | अनुच्छेद                                       |
| 12.     | Assignment     | समनुदेशन                                       |
| 13.     | Association    | संघ / साहचर्य                                  |
| 14.     | Attestation    | साक्ष्यांकन                                    |
| 15.     | Authority      | प्राधिकरण                                      |
| 16.     | Autonomous     | स्वायत्त                                       |
| 17.     | Bonafide       | वास्तविक                                       |
| 18.     | Bureaucracy    | नौकरशाही                                       |
| 19.     | Bye-law        | उपविधि                                         |
| 20.     | Charge         | प्रभार                                         |
| 21.     | Circular       | परिपत्र                                        |
| 22.     | Clerical error | लेखन - अशुद्धि / भूल / त्रुटि / लिपिकीय त्रुटि |
| 23.     | Compensation   | क्षतिपूर्ति                                    |

|     |                                     |                                 |
|-----|-------------------------------------|---------------------------------|
| 28. | अशोक कुमार लाँगायन                  | 3 0.06.2016                     |
| 29. | कुलदीप सिंह सभ्रवाल, कल्याण अधिकारी | 3 1.07.2016                     |
| 30. | नीना मेहता, ले. अ.                  | 3 1.7.2016                      |
| 31. | सुरेश चन्द्र बाबू, स. ले. अ.        | 3 1.07.2016                     |
| 32. | हरीश चन्द्र, व. ले.                 | 3 1.07.2016                     |
| 33. | प्रेम पाल शर्मा, स. ले. अ.          | 01.8.2016 (ऐच्छिक सेवानिवृत्ति) |
| 34. | सुनील कुमार, व. ले.                 | 3 1.08.2016                     |
| 35. | प्रेम कुमार जसवाल, रू. ले. अ.       | 3 0.09.2016                     |
| 36. | परमजीत वर्मा, व. ले.                | 3 0.09.2016                     |
| 37. | सुरजीत सिंह, व. ले.                 | 1.10.2016 (ऐच्छिक सेवानिवृत्ति) |
| 38. | गुलाम दीन, व. उपमहालेखाकार          | 3 1.10.2016                     |
| 39. | महेश पठानियां, स. ले. अ.            | 3 1.10.2016                     |
| 40. | तेज प्रकाश शर्मा, म. ले. अ.         | 3 1.10.2016                     |
| 41. | नीलम कक्कड़, स. ले. अ.              | 3 1.10.2016                     |
| 42. | रजनीश बाला शर्मा, व. ले.            | 3 1.10.2016                     |
| 43. | नरेश वधवा, व. ले.                   | 3 1.10.2016                     |
| 44. | यशपाल कोछड़, स. ले. अ.              | 3 0.11.2016                     |
| 45. | धर्मपाल सिंह कुहाड़, ले. अ.         | 3 0.11.2016                     |
| 46. | देविन्द्र प्रसाद, व. ले.            | 3 0.11.2016                     |
| 47. | अशोक कुमार शर्मा, स. ले. अ.         | 3 1.12.2016                     |
| 48. | पवन कुमार, व. लेखाकार               | 3 1.12.2016                     |
| 49. | बरडू राम, एम टी एस                  | 3 1.12.2016                     |

#### जिन कर्मचारियों का देहान्त हुआ

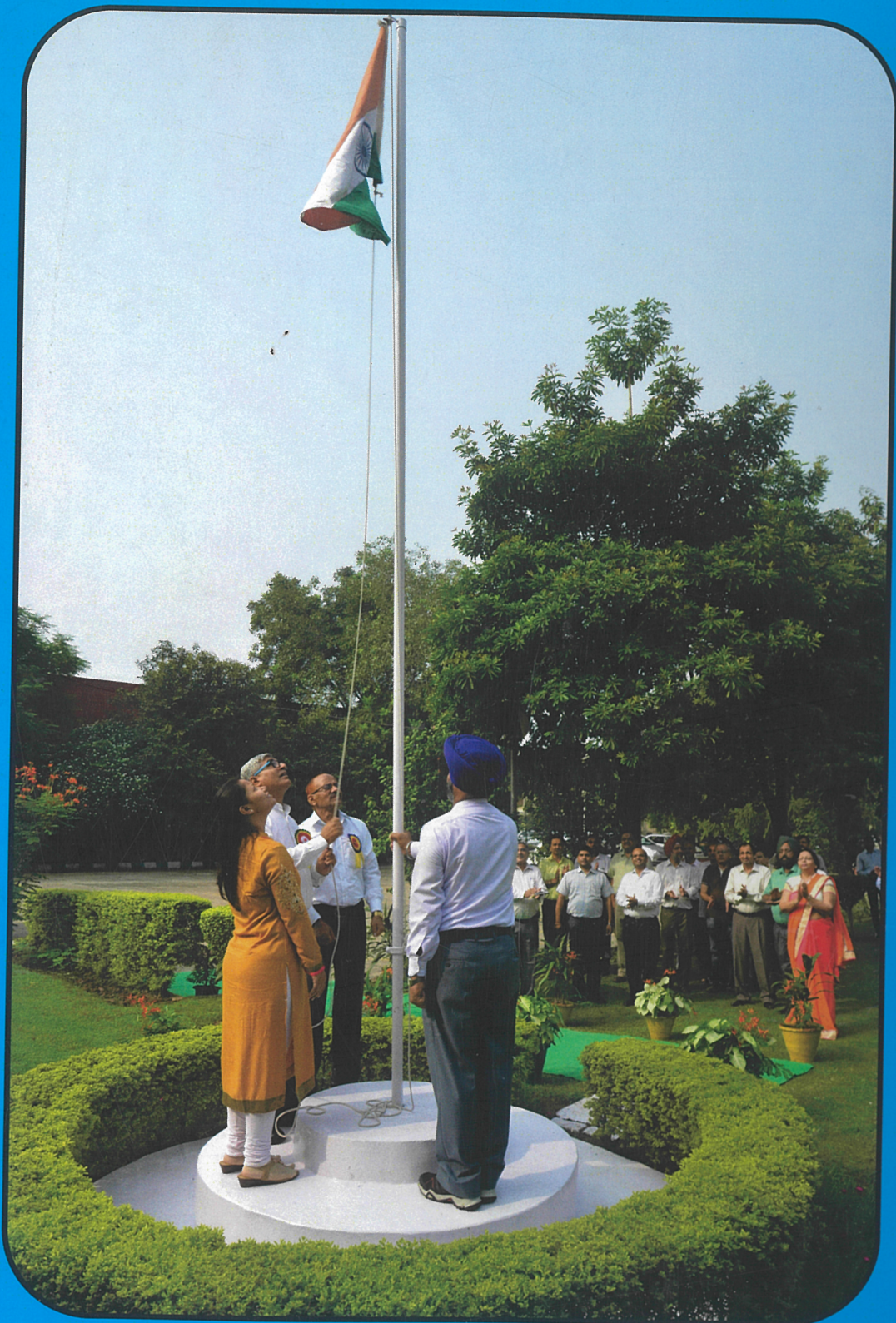
| क्रमांक | नाम व पदनाम             | सेवा निवृत्ति तिथि |
|---------|-------------------------|--------------------|
| 1.      | ज्योति भारद्वाज, व. ले. | 05.03.2016         |
| 2.      | आदित्य कुमार, डी.ई.ओ.   | 11.07.2016         |





कार्यालय की क्रिकेट टीम के सदस्य व अधिकारीगण





स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए श्री कर्ण सिंह जी  
महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा ।